मानव मन्दिर

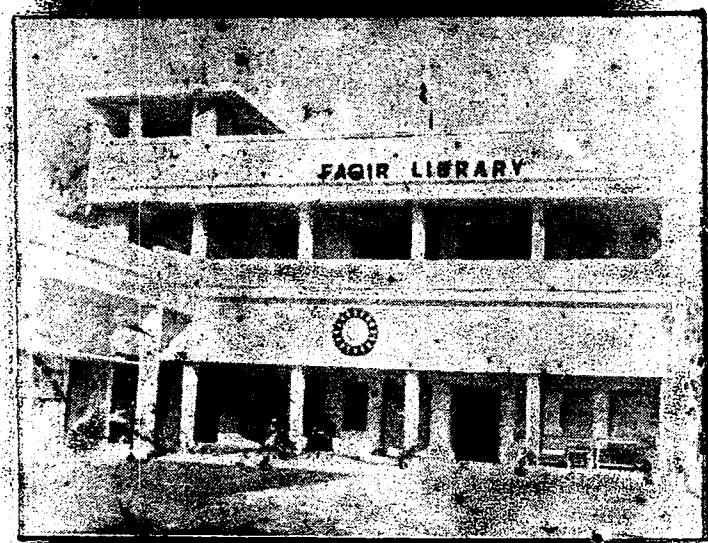

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

FORM IV

(See Rule 8)

Place of Publication	**Manavta Mandir, Hoshiarpur.**
Periodicity of Publication	**Monthly**
Printer's Name	**M. R. Bhagat**
Nationality	**Indian**
Address	**Manavta Mandir, Hoshiarpur**
Name of Editor-in-Chief	**Seth Durga Dass**
Nationality	**Indian**
Address	**House No. 2, Sector 19—A Chandigarh.**
Name and address of individuals, who own the MANAV MANDIR as partners, shareholders, holding more than one percent to the total capacity.	**Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.**

I, Durga Dass hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

DURGA DASS
Editer-in-Chief

Printed and Published by M. R. Bhagat, at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpur.

राय साहिब सुरेन्द्र नाथ जी की
पुण्य समृति

K. Venkateshwara
17/2/11

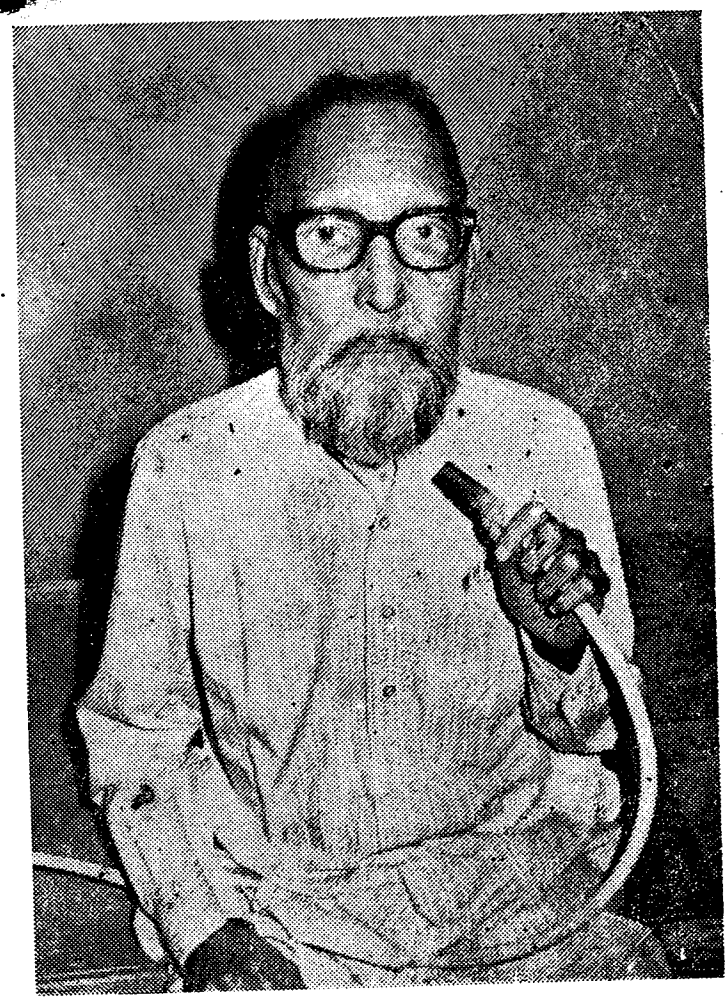

RAI SAHIB SURENDER NATH JI

मासिक

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

सम्पादक

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष १	दिसम्बर, १९७४	संख्या ९

भूमिका

मेरे छोटे भाई राय साहिब सुरेन्द्र नाथ का ६ सितम्बर १९७४ को हन्मकौण्डा (आन्ध्रा प्रदेश) में देहान्त हो गया, ७ सितम्बर से लेकर १७ सितम्बर तक मानवता मंदिर में दिए गए सत्संगों में शोक भरे अर्थात् सन्तों के संसार की दर्शाने वाले और मानव हृदय में वैराग्य उत्पन्न करने वाले शब्द पढ़े जाते रहे। एक महीने के अन्तर तीन मृत्यु हुईं। पहली मेरे प्यारे मामयां अर्थात् श्री मामचन्द शर्मा, दूसरी मेरे प्रिय मित्र सन्त कृपालसिंह जी महाराज और तीसरी मेरे छोटे भाई राय सुरेन्द्र नाथ की। इनकी मृत्यु की चोट के कारण मेरे मस्तिष्क में बार २ यह विचार आता रहा कि एक दिन मैंने भी जाना है। यह सत्संग मैंने सन्तों की वाणियों का सहारा लेते हुए निज अनुभवों के आधार पर उन विचारों के प्रभावाधीन जो मेरे मस्तिष्क में उत्पन्न हुए, अपनी शांति के लिए कराए, दूसरों को यदि कोई लाभ पहुंच जाए तो मुझे खुशी होगी। इसलिए इनको

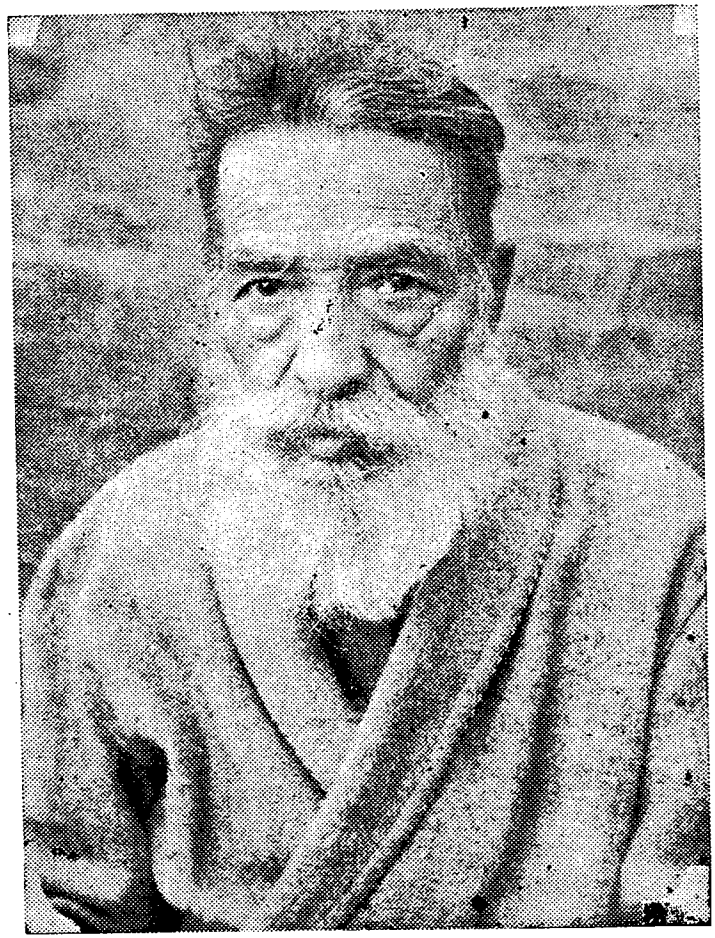

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

प्रकाशित करने का मन में विचार आया। सोचता हूं इससे क्या लाभ होगा ? मित्रो। इस संसार में रचना के क्रम में मानव जीवन बन जाता है और स्वाभाविक ही अपने आपको प्रकट करने के लिए विवश हूं। यह प्रकृति का नियम है, किसी के वश में नहीं है। जो जैसा है और प्रकृति ने जैसा बनाया है वैसा ही वह व्यवहार करेगा। काम तो सभी करते हैं। उदाहरण के रूप में वायु चलती है सूर्य चमकता है और तारागण चमकते हैं। इन कामों में इनका कोई निज स्वार्थ नहीं है। प्रकृति की शक्तियों का प्राकट्य स्वाभाविक है। व्यक्ति के अन्तर एक अहंकार है। जब वह आ जाता है तो वह इस अपने प्राकट्य और अपने काम में मैंपना पैदा करके अपने आप को दुखी अथवा सुखी करता रहता है।

मैं अपनी आत्मा से पूछता रहता हूं कि मेरा काम निष्काम और निस्वार्थ है ? मैंने इन सत्संगों में अपना अनुभव जो मुझे किसी वस्तु की खोज के क्रम में हुआ, सन्तों की वाणी का सहारा लेकर व्यक्त किया है। क्यों किया है ? पहला कारण

तो वह है जो मैंने ऊपर वर्णन कर दिया, दूसरे दाता दयाल जी महाराज का खयाल दिया हुआ था कि चोला छाड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मुझे पता नहीं कि जो अनुभव मैंने किया वही ठीक है मुझे किसी बात का दावा नहीं किन्तु इतना अनुभव है कि जिस प्रकार के संस्कार व्यक्ति अपने जीवन में लेता है वैसा ही करने के लिए स्वाभाविक ही विवश है।

मेरे छोटे भाई राय साहिब सुरेन्द्र नाथ मुझसे लगभग १२-१३ वर्ष छोटे थे। इसका नामकरण संस्कार मेरी मासी ने किया और इसका नाम ढ़ेरु मल रखा। क्यों ? मेरे बाद जितने बच्चों का जन्म हुआ जीवत नहीं रहे। मेरी मासी ने अपने विश्वास के अनुसार मिट्टी का एक छोटा सा ढेर बनाकर इसको जन्म लेते ही उस पर रख दिया। ढेर पर रखने के कारण नाम ढेरुमल रख दिया ताकि यह जीवत रहें। यह तो उसका विश्वास था। मेरा सम्बन्ध मौज़ाधीन अथवा कर्मानुसार दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के साथ था। मैं उस पवित्र विभूती को मालिक

का अवतार समझ कर प्रेम करता, पूजता और अपने दुखों सुखों का उपाय उनसे पूछता था। मैं अपने भाई को उनके दरबार में ले गया। उन्होंने कहा कि इसके नाम ढेरुमल में संस्कार गलत है। उन्होंने इसका नाम बदल कर सुरेन्द्र नाथ रखा और मुझे कहा कि इसको कुर्सी पर बैठा दो, यह ऊंचे पद का अधिकारी होगा। मेरा जीवन सदाचार और सच्चाई का था, चाहे मुझे आर्थिक कठिनाई थी लेकिन मैं उसको पढ़ाना चाहता था किन्तु पिताजी ने उसका विवाह नियत कर दिया। मेरे पास पैसा नहीं था दुखी हो कर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा से पहले युद्ध १९१६ में बसरा बगदाद चला गया। इस अपने भाई को Signaler तार बाबू भरती करा कर दाता दयाल जी महाराज के पास छोड़ दिया। उन्होंने इसको नाम दान दिया और फरमाया कि नाम जपना नहीं है। तेरे लिए "काम करना जीवन है और जीवन का अर्थ है काम।" पिछली आयु में तुम मेरी गोद में आ जाओगे। वही हुआ। इसने सारा जीवन काम किया। बसरे बगदाद चला गया उन्नति करते २

ट्रेफिक मैनेजर रेलवे विभाग हो गया। रिटायर होने के बाद विचार परमार्थ की ओर बदले और दाता दयाल की २१ किताबें जो उर्दू में थी इनका अंग्रेजी में अनुवाद किया। यह दाता दयाल जी महाराज ने जो विचार दिया था उसका परिणाम था। मेरी भी यही दशा है। फकीर बनने का संस्कार दिया और आज मैं भाग्यशाली हूं कि मैं इस फकीरों के धर्म या सन्तमत या मानव जीवन के रहस्य को समझ गया हूं। इन सत्संगों में मैंने बहुत कुछ स्पष्टीकरण किया है। जो लोग ध्यान से इनको पढ़कर मनन करेंगे, मेरा विश्वास है कि वह जीवन की यात्रा और इसके लक्ष्य को यदि अमली नहीं तो अकली तौर से लाभ उठाकर मानसिक और आत्मिक शांति प्राप्त कर सकेंगे।

अतः मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर चन्द ! तुम लक्ष्य पर पहुंच गए? इसका उत्तर मेरी आत्मा यह देती है कि लक्ष्य पर पहुंचना क्या है ? जहां अपने अस्तित्व समाप्त होकर अपने ही आद में मिल जाता है न मैं रहती है और न तू रहती है। इस अवस्था का अनुभव है। ठहरने का यत्न

करता रहता हूं मगर फिर चेतनता में आ जाता हूं। कब मेरी यह हस्ती गुम हो कर सदा के लिए परम तत्व में लीन हो जाएगी यह मेरे वश में नहीं है। मुझे तो शान्ति केवल इस एक विचार से मिलती है कि मैं कौन हूं ? एक चेतन का बुलबुला हूं Revolution के क्रम से पैदा हुआ और मौजा-धीन उसी में लीन हो जाऊंगा।

फकीर

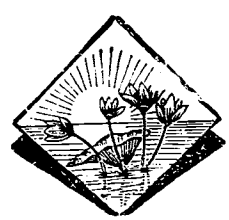

सत्संग हजूर परम दयाल जी महा-राज मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक ८ सितम्बर १९७४

(राए साहिब सुरिन्द्र नाथ जी महाराज के चोला छोड़ने पर)

सुगना पिंजरावा छोरि करि भागा
इस पिंजरे में दस दरवाजा, दसों दरवाजे किवरवा लागा
अंखियन सेती नीर वहन लाग्यो, अब कस नाहिं तू बोलत अभागा
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उड़िगे हंसा टूटि गयो तागा

राधास्वामी ! एक महीने के अन्दर तीन मौतें हुई सात अगस्त को मामचन्द चला गया। २१ अगस्त को संत कृपालसिंह जी चोला छोड़ गए और ६ सितम्बर को मेरा छोटा भाई राय़ साहिब सुरिन्द्रनाथ जी के शरीर का अन्त हुआ। कौन है जो अपने सम्बन्धी की मृत्यु पर शोक नहीं करता ? यद्यपि सदा के लिए नहीं किन्तु कुछ समय के लिए तो अवश्य दुख होता है लेकिन मेरे मस्तिष्क पर इन बातों का उल्टा

प्रभाव होता है। मुझे यह विचार आता है कि मैंने भी एक दिन चले जाना है। फिर सोचता हूं कि कहां जाना है? सुरेन्द्र नाथ जी मुझसे चौदह वर्ष छोटे थे। मैंने उनको अपने बच्चों की तरह पाला था। आज मैं प्रसन्न हूं कि वह तो अपनी यात्रा पूरी करके चले गए और मैं अभी तक यहाँ, फंसा हुआ हूं। वह Non-Matric अर्थात् दसवीं तक पढ़े थे। मैं उनको और पढ़ा न सका। मेरी तो इच्छा थी कि उनको और शिक्षा दिलवाता लेकिन मेरे पास इतना धन भी नहीं था और दूसरे पिता जी ने उनका विवाह रख दिया उसके लिए भी धन की आवश्यकता थी।

सुरेन्द्र नाथ का नाम पहले ढेरुमल था। वह स्कूल में पढ़ता था। एक बार मेरे साथ हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के पास लाहौर गया। सायंकाल का समय था, उन्होंने इसका नाम पूछा तो मैंने निवेदन किया कि महाराज इसका नाम ढेरुमल है। तो आपने कहा कि कैसा भद्दा नामहै, संस्कार ही अच्छा नहीं। मैंने प्रार्थना की कि हजूर इसका नाम बदल दें।

आज्ञा मिली कि कल प्रातःकाल मेरे पास लाना। मैं और सुरेन्द्र नाथ प्रातः को सेवा में उपस्थित हुए तो आप ने कहा कि तेरा नाम "सुर इन्द्र नाथ" अथांत् देवताओं का भी राजा। आज्ञा हुई कि इसको कुर्सी पर बैठा दो। मैंने सम्मान के विचार से इन्कार किया लेकिन उन्होंने कहा कि बैठा दो। लड़का कुर्सी के लिए आया है और यह कुर्सी पर बैठेगा।

उसका विवाह रखा गया। लेकिन मेरे पास धन नहीं था तो मैं दुखी हुआ। उसको सिगनेलर Singnaller भर्ती करा के मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास लाहौर में उसको छोड़ आया और मैं लड़ाई में वसरे वगदाद चला गया। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने उसको नाम दान देने के बाद कहा कि सुरेन्द्र ! तुमने नाम नहीं जपना। तुम्हारे लिए नाम यह है कि Life means work and work means life अर्थात् काम करना जीवन है और जीबन का अर्थ है काम। पिछली आयु में तुम मेरी गोद में आ जाओगे। उसको आज्ञा थी कि २४ घण्टे में १६ घण्टे काम करो। शौच स्नान

और भोजन के लिए प्रातः सायं एक २ घण्टा और ६ घण्टे रात को नींद। उसने उनकी आज्ञा का पालन किया। उसने सारा जीवन किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। वह दानी था और दुखियों की सहायता किया करता था। वह अफरीका से वापस आया तो उसका विवाह रखा गया। मुझे क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज का संस्कार था। मैंने उसको लिखा कि मैं पैसा भेजता रहता हूं तुम विवाह करा सकते हो लेकिन यदि तुम मेरे भाई हो और हजूर दाता दयाल जी महाराज के शिष्य हो तो स्वयं कमाई करके अपना विवाह कराओ। उसको क्रोध आया और विवाह छोड़कर अफरीका चला गया और फिर दो साल के बाद विवाह किया, उसके बाद फिर वसरे बगदाद चला गया।

मुझ पर हजूर दाता दयाल जी महाराज की शिक्षा का प्रभाव है। संसार यह समझता है कि बस नाम ले लो और बेड़ा पार। लेकिन असलियत यह नहीं है। नाम क्या है ? गुरु की जो आज्ञा है वही नाम है लेकिन वह सब के लिए एक ही

आज्ञा नहीं है। जीव की प्रकृति को देख कर उस के अनुसार गुरु उसको आज्ञा देता है। मैं और सुरेन्द्र नाथ दोनों जहाज में वसरे बगदाद जा रहे थे मैं टेलीग्राफ इन्सपेक्टर था और सैकन्ड क्लास यात्री था (II Class Passenger था और सुरिन्द्र नाथ वतौर A. S. M जा रहा था। और वह थर्ड क्लास यात्री (III Class Passenger) था मैं बाप को पत्र लिख रहा था। राए साहिब ने कहा कि मेरी ओर से भी लिख दो। मैंने कहा कि कार्ड का मूल्य चार पैसे है इसलिए यदि तुम कुछ लिखना चाहते हो तो दो पैसे दे दो। उसको क्रोध आया और उसने उसी समय प्रण किया कि मैं इतना परिश्रम करूंगा कि अपने भाई से बढ़ जाऊंगा। फिर उसने इतना परिश्रम किया और इतना काम करता था कि अंगरेज अधिकारी औफीसर रात को १० बजे जबरदस्ती कार्यालय से बाहर निकाला करता था उसके परिश्रम का यह फल निकला कि वह ट्रैफिक मैनेजर बना और २५०० रु. वेतन लेता था और राय साहिब का पद पाया। रिटायर होने के बाद भी वह बहुत काम करता था। उसने हजूर दाता

जो महाराज की इक्कीस किताबो का अंगरेजी में अनुवाद किया। अब वह ज्ञान ध्यान और अनुभव के आधार पर बहुत (Advance) आगे था। उसकी मौत अच्छी हुई।

मरना भला विदेश का जहां अपना न कोए।

हन्मकुण्डा में उसका अपना तो कोई था नहीं। वहां एक सत्संगी थे लेकिन उन सतसंगियों ने उसकी इतनी सेवा की है घर वाले भी इतनी न कर सकते। परसों सायंकाल वह चोला छोड़ गए उसका परिणाम क्या हुआ या हुआ होगा मैं यह सोचने को विवस हूं।

सुगना पिंजरवा छोरि कर भागा,
इस पिंजरे में दस दरवाजा, दसों दरवाजे किबरवा लागा

जो व्यक्ति अपने जीवन में दस दरवाजों से आगे नहीं गया अर्थात् उसकी निर्विकल्प समाधी नहीं लगती या वह महाशून्य से आगे नहीं जाता वह मरने के बाद आगे नहीं जा सकता क्योंकि वह तो दस दरवाजों से बाहर नहीं गया। दस दरवाजे क्या हैं? पांच कर्म इन्द्रियां और पांच ज्ञान इन्द्रियाँ। लोग तो आंख, कान, नाक, मुख आदि

को दस दरवाजे समझते हैं लेकिन मैं पांच कर्म इन्द्रियों और पांच ज्ञान इन्द्रियों को दस दरवाजे समझता हूं। हमारे अन्तर जो सुगना है जब तक वह जीवन में दस दरवाजों से आगे नहीं जाएगा या जब तक जीवन में उसको दस दरवाजों से आगे जाने का अभ्यास नहीं है वह मरने के बाद इनसे आगे नहीं जा सकता। इसलिए जब उसका शरीर छटेगा तो उसका सम्बन्ध या तो शारीरिक जीवन से होगा या मन के विचारों से होगा, चाहे वह विचार गुरुस्वरूप के हों या कर्म धर्म के हों और चाहे ईश्वर भक्ति के हों वह इन दस इन्द्रियों में ही रहेगा और उसका आवागमन समाप्त नहीं होगा।

कबीर साहिब कहते हैं कि इस पिन्जरे के जो दस दरबाजे हैं इनमें ताला लगा हुआ है। सन्तों की इन वाणियों को पढ़कर संसार पागल हो गया। मैं इन दस दरवाजों से कैसे निकला? दस दरवाजों से गुरु निकालता है। हजूर बाबा साबनसिंह जी महाराज कहा करते थे कि दस दरवाजे लंघो ते आगे मैं खड़ा मिलूंगा। मैं कैसे इनसे निकला? केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं

जाता । जब से मुझे यह पता लगा तो फिर मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जितनी शकलें और रंग रूप पैदा होते हैं यह सब माया है। कल्पित हैं। हैं नहीं किन्तु भासते हैं। इसका परमाण देता हूं सुनो ;--

दो दिन पूर्व रात को मेरे मकान पर एक आदमी आया मैंने उससे कहा कि क्यों आए हो। वह कहने लगा कि महाराज ! मेरे कोई लड़का नहीं था मैं और मेरी स्त्री आपके पास आए थे। आपने परसाद दिया था और अब मेरे लड़का हुआ है। मैंने पूछा कि घर में हुआ या हस्पताल में। तो उसने कहा कि घर में। मैंने पूछा कि तुम्हारी स्त्री को कोई कष्ट तो नहीं हुआ ? वह कहने लगा कि, उसको धष्ट क्यों होता आप तो हर समय उसके साथ लगे रहते थे। अब मैं तो गया नहीं और न ही मुझे कोई पता है। इन बातों ने मुझे उस दरवाजों से निकलने के लिए विवश किया। जिसको जीवन में यह ज्ञान नहीं हुआ और यह समझ नहीं आई कि यह सब माया है वह इस चक्कर से निकल नहीं सकता और न ही अपने आद घर पहुंच सकता

है। मरते समय कोई कहता है कि बाबा फकीर आए, कोईकहता है कि हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आए, कोई कहता है कि राम या कृष्ण या कोई देवता या देवी आई और उनको ले गए। लेकिन मैं कहता हूं कि वह कहां ले गए ? वह जो उनके अन्तर रूप प्रकट हुआ वह तो न बाबा फकीर था, न राम था, न कृष्ण था और न ही हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज थे, तभी तो मैं कहता हूं कि मैं अनामी धाम से सन्तमत की शिक्षा को स्पष्ट करने आया हूं। इस समय के गुरुबाद ने संसार को मूर्ख बनाकर अपने जाल में फंसाया हुआ है।

आप लोग आए हैं मुझे गुरु मानते हैं। मेरे सिर पर भी कोई जिम्मेदारी है। तुम लोग जो सुमिरन ध्यान करते हो कोई किसी ढंग से और कोई किसी ढंग से। तुमको इन दस दरवाजों में सुमिरन करने का फल मिलेगा। यह जितने भी सुमिरन ध्यान करने वाले हैं इनमें तो कोई भी दस दरवाजों से बाहर नहीं जा सकता। दस दरवाजों से सतगुरु निकालता है। दस दरवाजों के अन्दर साधन

करने वालों को धन, सम्पत्ती, मान प्रतिष्ठा और ऋद्धि सिद्धि तो प्राप्त हो जाएगी लेकिन वह आवागमन के चक्कर से पार नहीं जा सकते। आज यह राम सरनदास भोपाल से आया है यह कहता है कि बाबा जी। मुझे खून के दस्त लग गए थे काफी इलाज कराया और बहुत दवाईएं प्रयोग की लेकिन कोई आराम न आया। मुझे काफी कष्ट था मैंने आपका फोटो पेट पर रख लिया और आपका ध्यान करने लग गया। मुझे बिलकुल आराम हो गया। सुमरिन ध्यान से यह वस्तुएं तो मिल सकती हैं लेकिन आवागमन का चक्कर समाप्त नहीं होगा। अब यह राम सरनदास भी मेरी गुड्डी चढ़ाएगा।

पहले कोई बाहर का सतगुरु खोजो। वाणियों को पढ़ो वहां लिखा है कि दसवे द्वार से आगे तुमको सतगुरु ले जाएगा। तुम समझते हो कि गुरु की शकल तुमको निकाल कर ले जाएगी या हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का रूप या बाबे फकीर का रूप तुमको ले जाएगा। यह सब धोखा है। गुरु तुमको यह

समझ, ज्ञान और विवेक देगा कि भई ! जो कुछ तुम अपने में देखते हो यह सब माया है। गुरू तुमको सुरत शब्द योग बताएगा और तुमको अपने अन्तर में शब्द गुरु को पकड़ने का उपदेश करेगा।

शब्द गुरु को कीजिए बहुते गुरु लवार।
अपने अपने स्वाद को ठौर ठौर बट मार।

बटमार का अर्थ हैं डाकू। आजकल के गुरु जो सच्चाई वर्णन नहीं करते क्या वह बटमार नहीं हैं ? यह तो हमको रास्ते में ही मार देते हैं। हमको आगे नहीं जाने देते लेकिन इनका भी कोई दोष नहीं है क्यों ? क्या आप लोग मेरे पास इस संसार से पार होने के लिए आते हो ? नन्दलाल हलवाई मेरे पास आया करता था। उसको कष्ट हो गया और उसको हस्पताल ले गए वह आ के कहता है कि बाबा जी ! आप हस्पताल में मेरे साथ रहते थे लेकिन मुझे तो कोई पता नहीं और न ही मैं उसके पास हस्पताल में गया। अब जब कभी मैं उसकी दुकान के पास से गुजरता हूं तो वह उठकर मेरी रिक्षा रोक लेता है और मुझे एक रुपया देता है। मैं जानता हूं कि संसार इस शिक्षा का अधिकारी नहीं

है लेकिन मैं विवश हूं ।

मेरा छोटा भाई सुरेन्द्र नाथ मर गया । मामचन्द मर गया और सन्त कृपालसिंह जी चोला छोड़ गए । विचार आता है कि मैं भी जाऊंगा लेकिन कहां जाऊंगा । जब जीवन में दस दरवाजों से परे जाने का स्वभाव न होगा तब तक मरने के बाद वापिस आना पड़ेगा और आवागमन समाप्त न होगा । यह मेरी समझ में आया है । हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना । मैं शिक्षा को बदल चला किन्तु मेरा यह दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। कहा तो और सन्तों ने भी यही लेकिन बात को खोलकर समझाया नहीं । एक तो लोग इस शिक्षा के अधिकारी नहीं हैं और दूसरे यदि समझा दिया जाए तो फिर पैसा नहीं आता । यदि परदा रखो तो लोग धन देते हैं । अब यह नन्दलाल हलवाई क्यों रुपया देता है ? क्योंकि यह समझता है कि मैं हस्पताल में इसके साथ था लेकिन मैं तो था नहीं । इसलिए यदि मैं इसके रुपए को खा जाऊं तो मेरा

क्या हाल होगा ? मैं इसके रुपए को खा के कहां जाऊंगा ? जिन गुरुओं ने इस प्रकार धन एकत्र किया और खाया, मोटरें खरीदीं या अपनी गद्दिएं बनाई या अपने बच्चों को दे गए उनमें से कोई भी अपने घर नहीं पहुंचा। वह तो स्वयं दस दरवाजों में ही फंसे रहे और तुमको भी फंसाते रहे।

क्योंकि मेरे भाई के सिर पर अब कोई जिम्मेदारी नहीं थी। इसलिए मुझे उसकी मृत्यु का कोई शोक नहीं है। काहे का शोक करूं, मैं तो प्रसन्न हूं कि वह बीमारी से छूट गया, मरना तो था ही।

आंखियन सेती नीर बहन लाग्यो।
अब कस नाहिं तो बोलत अभागा॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो
उड़िगे हंस टूटि गयो तागा॥

एक आदमी त्रिकुटी में गुरुस्वरूप का या राम का या कृष्ण का ध्यान करता हुआ मरता है उसको भी दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। कर्म धर्म करने वाले को भी दूसरा जन्म अवश्य लेना होगा। हां! यह बात हो सकती है कि उसको जन्म अच्छा मिले। आवागमन से या दस दरवाजों से पूरा गुरु निकलता

है। इसलिए बानी कहती हैं कि पूरा गुरु खोजो।

मैं संसार में पूरे गुरु के रूप में प्रकट हुआ हूं और सच्चा ज्ञान देता हूं। मुझमें कोई विशेषता नहीं आ गयो। पूरे गुरु का अर्थ सच्चा ज्ञान है। जो व्यक्ति इस जीवन में इस ज्ञान को प्राप्त करके अपने आपको शब्द में ठहरा सकता हैं वह इस चक्कर से निकल सकता है। दूसरा नहीं। यह मेरा अनुभव है लेकिन दावा नहीं। लोग कहते हैं कि गुरुओं के विरुद्ध बोलता हूं। नहीं, मैं तो उनके हित में बोलता हूं और तुमको भी सत्यता वर्णन करता हूं कि यदि इस चक्कर से छुटकारा चाहते हो तो इसके लिए यह उपाय है। मैंने तो स्पष्ट वर्णन करके मन्दिर की जड़ों पर कुल्हाड़ी मारी है। मैं तो चकित हूं कि हजूर दाता दयाल जी महाराज यहां का काम कैसे चलाते हैं। यदि परदा रखता तो बहुत बड़ा डेरा बना लेता। संतों ने बड़े बड़े डेरे बनाए। रुहानी सत्संग खड़े किए और मानव केन्द्र बनाए लेकिन क्या ले गए साथ ?

आज अपने भाई की कर्म क्रिया कर देता हूं। उसकी अपने बच्चों के साथ तो कोई आसक्ति थी

नहीं। मेरे साथ वह अवश्य प्रेम करता था। यदि उसकी रूह यहां कहीं है तो मैं उसको कहता हूं कि शब्द में जाओ और इस चक्कर से निकल जाओ। मैं अपने बारे में सोचता हूं कि फकीर! मरने के बाद कहां जाओगे? मेरी यह इच्छा है कि मरने के बाद यह बता जाऊं कि मैं कहां गया। सोचता हूं कि लोगों को तो तुम उपदेश करते हो तुम बताओ कि राए साहिब सुरेन्द्र नाथ या सन्त कृपालसिंह जी महाराज कहां गए? क्योंकि हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने मुझे कहा था कि सन्त कृपालसिंह जी रहस्य ज्ञाता हैं इसलिए मैं उनका आदर करता हूं अब मेरे सामने मेरा अपना प्रश्न है कि मैं कहां जाऊंगा? आप शायद न समझ सकें किन्तु मैं अपने आप को ही समझाता हूं :—

उत ते कोई न आया जा से पूछूं जाए।
इत ते सब कोई जात है भार लदाय लदाय।

ऐ मानवता मन्दिर में रहने वालों! तुम लोग मेरा सत्संग सुनते हो अपने जीवन बनाओ। लेकिन अपने आचरण पर कोई ध्यान नहीं देता। मैं सोचता हूं कि क्या तुम किसी को बदल सकते

हो ? बदला उसको जाता है जो स्वयं अपने आप को बदलना चाहे। दूसरा नहीं बदल सकता। राए साहिब ने सारा जीवन गुरु की आज्ञा का पालन किया और मैं भी गुरु आज्ञानुसार यह काम करता हूं और शिक्षा को बदल रहा हूं। ठीक है या गलत है इसका मुझे पता नहीं।

जो भी यहां से गया वह न तो वापिस आया और न ही आ के उसने कुछ बताया। पहले मैं भी यह मानता था कि मरने के बाद मरने वाला स्वप्न में आ के कोई बात किसी को बता जाता है, लेकिन अब नहीं मानता क्यों ? मैं यहां जीवित बैठा हुआ हूं कोई कहता है कि बाबा जी आप मुझे स्वप्न में मेरी बीमारी की दवाई बता गए, कोई कहता है पुत्र दे गए, कोई कुछ कहता है और कोई कुछ कहता है लेकिन मैं तो कहीं नहीं जाता तो मैं कैसे मानूं कि कोई मरा हुआ आ के स्वप्न में कुछ बता जाता है। आता होगा लेकिन मैं तो अपना अनुभव बताता हूं। संगनई गांव का रघुवीर सिंह नामी एक सत्संगी जब मरा तो उसके कुछ समय बाद उसकी स्त्री मेरे पास आई और कहने

लगी कि बाबा जी ! मेरा पति मेरे स्वप्न में आया । मैंने उससे पूछा कि तुम कहां गए हो । उसने कहा कि बहुत दूर चला गया हूं और बहुत सुखी हूं । अब मेरा भाई सुरेन्द्र नाथ मर गया लेकिन मुझे कोई पता नहीं कि वह कहां गया । सबने काल और माया में बातें की हैं । मरनेके बाद कोई नहीं आता ।

मुझे लोग जो इच्छा कहले लेकिन मैं ने यह देखा है कि जब पण्डितों का राज था तो पण्डितों के सम्बन्ध में ऐसी ऐसी बातें लिख दी गईं कि आज तक उनका सम्मान होता है, मुसलमानों के समय मौलवियों और काजियों की गुड्डी चढ़ी, अपने समय में बौद्धों की गुड्डी चढ़ी और अब सन्तों का युग है और इनकी गुड्डी चढ़ी हुई है । किसी के भगवें कपड़े पहन रखे हैं, किसी ने जटा बड़ाई हुई है और किसी ने दाढ़ी बढ़ा रखी है । संसार इनको संत समझता है । मैं हूं सत्यप्रिय । सच्चाई का इच्छुक हूं और असलियत को देखना चाहता हूं ।

अब वहां से तो कोई वापस आता नहीं लेकिन

कबीर साहिब कहते है कि वहां से सत्गुरु आता है और जीवों को भवसागर से पार कर देता है। भवसागर क्या है ? पांच कर्म इन्द्रियां और पांच ज्ञान इन्द्रियां। इनमें हमारा सुगवा फंसा हुआ है और सत्गुरु जीव को इनमें से निकाल देता है। कैसे निकाल देता है ? यह तो कबीर साहिब को पता होगा। मैंने अपने आपको सन्त सत्गुरु कहा है। मैं किसी को नहीं निकाल सकता हां ! निकलने का उपाय बता सकता हूं। वह उपाय क्या है ? कि ऐ इन्सान ! गुरुस्वरूप को पकड़ने या गुरु से चिपटने की बजाय तुम अपने अंतर में शब्द को पकड़ो। जब तक तुम्हारी सुरत अपने अन्तर में कर्म और ज्ञान इन्द्रियों को नहीं छोड़ती और शब्द अर्थात् नाम या अनहद बाणी को नहीं छोड़ती वह भवसागर से पार नहीं जा सकता। यह मेरी समझ में आया है। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिए जो समझ में आया वह कहता रहता हूं। यह समझ मुझको तुम लोगों मिली से जो यह कहते हैं कि मेरा रूप उनके

अन्तर यह कर गया और वह कर गया। यदि मैं मन के चक्कर में आ गया तो फिर मैं ऊपर नहीं जा सकता। यदि समझ में आ जाए तो अपना ईष्ट ऊंचा रखो किन्तु यह समझ सबको नहीं आती इस वास्ते मैंने इन्सान बनो की आवाज उठाई कि अपने विचार अच्छें रखो, हेरा `री मत करो और किसी का बुरा मत सोचो। मैं सोचता हूं कि फकीर ! तुमने यह काम करके क्या किया। यहां मन्दिर में दस बीस आदमी रहते हैं यह प्रतिदिन तेरा सत्संग सुनते हैं यह नहीं सुधर सके तो क्या लाभ तेरा इस काम करने का ? क्या बना लिया तूने मानवता मन्दिर बनाकर ? हृदय में उदासीनता आ गई। यह समझ आई कि मैं तो अपना कर्म भोग रहा हूं।

अब हम चले अमरपुरी, टारें टूरें टाट।
आवन होय सो आइए, सूली ऊपर बाट॥

जब तक सूली नहीं चढ़ोगे आगे नहीं जा सकोगे। सूली का क्या अर्थ है ? सब सहारे छोड़ देना। जब आदमी को सूली पर चढ़ाया जाता है तो गरदन को रस्सी के साथ बांधकर उसको

लटकाया जाता है लेकिन उसको उस समय न हाथों का न पाँव और न कोई और सहारा होता है। इसलिए जब तक तुमने बाबे फकीर का, राम का कृष्न का या किसी और गुरु का सहारा लिया हुआ है तुम सूली पर कैसे चढ़ोगे? जब तक सूली पर चढ़े आदमी को कोई सहारा है वह मरेगा नहीं। ऐसे ही जो आदमी आगे जाना चाहता है, जब तक उसको कोई सहारा है, वह अपने आद घर नहीं जा सकता। इसलिए सिवाए शब्द के और सब सहारे तोड़ दो। इस वास्ते सन्तों के मार्ग में सुरत शब्द योग या नाम की महिमा है। सुरत से शब्द को पकड़ने का नाम "नाम" है। अन्तर के शब्द को सुरत से पकड़ने से तुम्हारे बाकी सब सहारे टूट जाएंगे। वह जो अवस्था है उस अवस्था से हम सब आए हुए हैं।

कोई महात्मा ऐसा भाषण नहीं देता। यदि मैं यह सच्चाई वर्णन करता हूं तो मैं समझता हूं कि मैं भूल कर रहा हूं क्योंकि तुम लोग संसारी हो और तुमको सच्जाई की आवश्यकता नहीं है। तुम लोग सहारा रखो। सूली ऊपर चढ़ना सरल काम नहीं है।

सहारा पकड़ो और उस सहारे को शब्द स्वरूपी गुरु मानो। यदि तुमने इसको पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म नहीं माना तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। इसलिए :—

गुरु को मानुष मानते सो नर कहिए अन्ध।
दुखी होयं संसार में आगे यम का फन्द।

मैं जानता हूं कि मैं ऊंचा बोल रहा हूं किन्तु क्या करूं यह मेरा कर्म भोग है और गुरु आज्ञा है। मैं नहीं कहता कि मेरा सहारा लो किन्तु जिस गुरु से तुमने नाम लिया हुआ है उसको हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज या सन्त कृपाल सिंह जी या स्वामी शिवानन्द जी या बाबा फकीर मत समझो। उसको शब्द स्वरूपी समझो। इस वास्ते संतों ने रोचक बातें कही हैं ताकि जीवों का विश्वास बैठ जाए कि वह परम तत्व सत्गुरु के रूप में इ संसार में आता है किन्तु यह मत समझो कि वह जन्मता या मरता है। जो लोग गुरुओंके भंडारे करते हैं या उनके श्राद्ध करते हैं, उन्होंने न गुरु को समझा है, न ही गुरुमत को समझा है और न ही गुरु धारण किया है।

गुरु मध्य आद अनत अद्भुत अमली अगम अगोचरम्
विभू विरज पार अपार निर्गुण सगुण सत्य विशेषूरम्

श्री मामचन्द या संत कृपालसिंह जी या राए साहिब सुरेन्द्र नाथ के अपने कर्म होंगे। क्या पता कि वह कहां गए लेकिन मैं राए साहिब को अपने पुत्रों के समान समझता रहा---

सूली ऊपर घर करै. विष का करै अहार।
ताको काल कहा करै, आठ पहर होशियार॥

काल है तुम्हारा मन। तो जिसका ईष्ट बहुत ऊंचा है अर्थात् मन से ऊंचा है उसको मन क्या कर सकेगा। उसको न ज्ञान इन्द्रियां और न कर्म इन्द्रियां कुछ कर सकती हैं। जिसने गुरु को बाबा फकीर या बाबा चरनसिंह जी महाराज या हजूर बाबा सावनसिंह महाराज दाढ़ी मूंछ वाला समझा हुआ है उसको तो काल अर्थात् तुम्हारा मन खा जाएगा। वह मन के चक्कर से या आवागमन के चक्कर से नहीं निकल सकता।

यार बुलाते भाव से, मो पै गया न जाय।
धन मैली पिउ ऊजला, लाग न सक्के पाय॥

तुम्हारे अन्तर में नाम गूंज रहा है और तुमको

बुला रहा है। सुरत पर क्योंकि खोले चढ़े हुए हैं और मैली है इसलिए वह शब्द से मिल नहीं सकती अर्थात् तुम्हारा मन गन्दा है इसलिए तुम उस शब्द को पकड़ नहीं सकते।

जिस कारन मैं गया था, सो त' मिलिया आय।
साईं तो सम्मुख खड़ा, लाग कबीरा पाय॥

जिस वस्तु के लिए मैंने जीवन में इतना प्रयत्न किया अब मुझे उसका पता लग गया। मैं तो राम को मिलने निकला था। इस जनून में एक दृश्य द्वारा २४ घण्टे रोने के पश्चात हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में पहुंच गया। उन्होंने मुझे सन्त मत दिया और फरमाया कि मेरी आज्ञा मानो तुमको सच्चा सतगुरु सत्सगियों के रूप में मिलेगा। अब आप लोग मिल गए और आप लोगों के अनुभवों से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। अब मैं प्रकाश और शब्द का साधन करता हूं। जब मन में आता हूं तो हजूर दाता दयाल जी महाराज का रूप बनाता हूं क्योंकि मन तो सहारा चाहता है इसलिए इसको सुमिरन ध्यान और कर्म का सहारा देता हूं। अब बात तो समझ में आ गई लेकिन यह पता

नहीं कि मेरा परिणाम क्या होगा। जीवन में एक जनून था। अब मार्ग तो मिल गया अब अमल करना मेरा काम है ।

जो आवे तो जाय नहिं, आय तो कहां समाय।
अकथ कहानी प्रेम की कैसे बूझो जाय ।।

जो आता है वह जाता नहीं और यदि आता है तो कहां जाता है। तुम्हारे अन्तर बाबे फकीर का रूप आया यदि वह सदा रहता तो फिर मैं मान लेता लेकिन वह तो लोप हो गया। सदा रहने वाली वस्तु तो तुम्हारी अपनी जात है। तुम दायम और कायम हो। असली बाबा फकीर तो वह है जो प्रकाश में रहता हुआ प्रकाश को देखता है और शब्द में रहता हुआ शब्द को सुनता है। वह सदा से है और सदा रहेगा किन्तु भ्रम में आके इस चक्कर में फंस गया।

कौन देश से आईया, जाने कोई नांह।
वह मारग पाबे नहीं भूल पड़ी जग मांह ।

यदि कबीर साहिब होते तो मैं उनसे पूछता कि मैं कहां से आया हुं। मुझे पता नहीं। मैं भी कह देता हूं कि मैं अनामी धाम से आया हूं। ऐसे

ही कबीर साहिब ने भी कहा है कि हम अवगत देश से आए हैं। अनामी या अवगत क्या है ? वह वह अवस्था है जहां कोई गति नहीं। जब वहां गति होती है तो हमारे अन्तर कोई वस्तु बन जाती है और सनसनाहट पैदा हो जाती है। वहां तो अवगत है यदि उसको कोई देखना चाहे तो पहले सूली पर चढ़े फिर उस अवस्था को देखे इसलिए बानी में आया है :---

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे तब पावे कुछ सार॥

नांव न जाने गांव का, बिन जाने कहां जांव।
चलता चलता जुग भया, पाव कोस है गांव॥

इसलिए गुरु की आवश्यकता है यदि पूर्ण गुरु नहीं मिला तो सारी आयु यात्रा करते करते ही मर जाओगे और लक्ष्य का पता नहीं लगेगा। हो सकता है मुझे भी न लगा हो। मैंने तो यह समझा है कि न मैं पहले था और न फिर रहूंगा। मेरे अन्तर में जो चेतन शक्ति है वह तो प्रकट हुई है। उस तत्व में हलोर हुई, कोई फकीर बन गया, कहीं सूर्य बन गया, कहीं पृथ्वी बन गई, कही लोक लोकान्तर

बन गए, कहीं स्थूल, कहीं सूक्ष्म और कहीं कारण प्रकति बन गई और जब टूटी तो सब कुछ समाप्त। न पहले कुछ था और न बाद में रहेगा। पहले भी ज़ात थी, अब भी ज़ात है, और फिर भी ज़ात रहेंगी।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने भी एक जगह लिखा है :---

"साधो कौन आया और कौन गया"

क्योंकि उनके साथ मेरा अनुभव मिलता है इसलिए मुझे कोई अफसोस नहीं है। मैं भी तो कहता हूं कि मेरे अन्तर चेतन शक्ति प्रकट हुई है। कर्म इन्द्रियां और ज्ञान इन्द्रियां बन गई हैं क्योंकि "जो उपजे सो विनसे" बुलबुला बना और टूटा। इसलिए इस ज्ञान से मुझे शांति मिली।

जन्म मरण सब खेल है, मन का मनमाया व्यौहारा।
उत्पति स्थिति प्रलय की लीला सब माया विस्तारा॥

मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर यहां तक पहुंचा। केवल इस एक विचार से कि मैं कहीं नहीं जाता। मेरा मस्तिष्क बदल गया, रक्त

बदल गया, मेरा जीवन बदल गया। मैं कौन हूं ? चेतन का एक बुलबुला। यही हजूर दाता दयाल जी फरमाया करते थे। प्रकृति में गति हुई। फकीर बन गया। मामचन्द बन गया। सन्त कृपाल सिंह जी महाराज बन गए। जबतक हैं तबतक हैं जब टूट गए तो फिर कहाँ गए ? न पहले थे और न आगे होंगे। इसलिए ज्ञान के बिना गुजारा नहीं।

सिन्ध में लहर उठत दिन रातो काल चक्र का झूला।
झूले ब्रह्मा विष्णु महेशा कारण सूक्ष्म स्थूला॥

यह काल का चक्कर है। इसमें बुलबुले पैदा हो जाते हैं और अपना खेल खेल कर चले जाते हैं। न सुरेन्द्र नाथ था न मामचन्द था और न सत कृपाल सिंह थे। सबकी याद समाप्त हो जाएगी। यह है परिणाम।

कीचड़ में लतपत कभी होते कभी नहाते धोते।
कभी जाग परपंच रचाते कभी नींद सुख सोते॥

सुरेन्द्र नाथ ने सारी आयु क्या किया ? बहुत काम किया। राए साहिब बन गया। लाखों का मालिक बन गया और अब क्या हुआ ? समाप्त हो गया।

बाप के बीरज मां के रज में, मैंने किया प्रवेशा।
निज स्त्री के गर्भ में आकर, धार पुत्र का भेसा ॥
कभी पुत्री कभी पुत्र बना मैं कभी गुरु कभी चेला।
समझ जो हो तो समझ बूझ ले, रूप अगम अलबेला ॥

हमारा रूप जात है उसमें हलोर हुई और जीव जन्तु और लोक लोकान्तर आदि बन गए यह सब उसी का खेल है।

शब्द स्पर्श रूप रस गंधा, सब ही मेरे रूपा।
गगन पवन अगनी जल पृथ्वी, मैं परजा मैं भूपा ॥

मैं समुद्र में लहर बून्द सब, झाग सृष्टि रच लीना।
राधास्वामी कीसंगत पाई, निज स्वरूप तब चीन्हा ॥

राधास्वामी दयाल पूर्ण गुरु की संगत से ज्ञान और विवेक मिलता है और झगड़े समाप्त हो जाते हैं लेकिन सबके नहीं होते। संसार तो सब माया में फंसा हुआ है यह मेरी माया ही थी जो मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा।

सोचता हूं कि फकीर ! तुमने सत्संग करा के या मानवता मन्दिर बना के या भेद को खोल कर क्या कर लिया ? शायद ही कोई सुधरा हो लेकिन सुधरता वह है जो सुधरना चाहता है। इसलिए संत अपने आप में कोई न कोई दोष लगा

लेते हैं। मैं तो मानवता मन्दिर बना के माया में फंस गया। मैं ही नहीं फंसा, हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज, सन्त कृपालसिंह जी और जिन्होंने डेरे मठ बनाए हुए हैं वह सब ही माया में फंसे हैं। यह डेरे वाजयां सब माया ही तो है। सब अपना अपना कर्म भोग कर चले गए और मैं भी अपना कर्म भोग रहा हूं।

सबको राधास्वामी

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महा-

राज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १० सितम्बर १९७४ प्रातः

(राए साहिब सुरेन्द्रनाथ जी को श्रद्धांजली)

बहुरि नहिं आवना या देस ॥
जो जो गए बहुरि नहिं आए, पठवत नाहिं संदेश ।
सुर नर मुनि औ पीर औलिया, देवी देव गनेस ॥
धरि धरि जन्म सबै मरमे हैं, ब्रह्मा विस्नु महेश ।
जोगी जंगम और सन्यासी, डीगम्बर दुरवेश ॥
चुंडित मुंडित पंडित लोंई, सुर्ग रसातल सेस ।
ज्ञानी गुनी चतुर औ कविता, राजा रंक नरेस ॥
कोइ रहीम कोई राम बखानै, कोइ कहे आदेश ॥
नाना भेष बनाय सबै मिलि, ढूंढ़ि फिरे चहुं देश ।
कहैं कबीर अन्त न पैहो, विन सतगुरु उपदेस ॥

राधास्वामी ! मैंने कबीर साहब का यह शब्द सुना । मेरी सारी आयु अपने आद घर की खोज में गुजरी । यद्यपि मुझे इस बात का कोई दावा नहीं है कि जिस परिणाम पर मैं आया हूं यही ठीक है किन्तु मेरा निजी अनुभव इस परिणाम

को सच्चा मानने के लिए विवश है। कबीर साहिब कहते हैं कि :---

वहुरि नहिं आवना या देश

वह कहते हैं कि इस देश में वापस नहीं आना है। मेरा अनुभव यह है कि तत्वों के मेल से या गति से एक चेतन्य शक्ति पैदा हो जाती है जिसकी आद अवस्था हमारी सुरत है। उसकी दूसरी अवस्था हमारा प्रकाश स्वरूप हो कर प्रकाश का आनन्द लेना है। मैं उसको आत्मानन्द समझता हूं। फिर उससे नींचे आ कर संकल्पों, भावों और विचारों में खेलना हंस गति है और फिर इससे नीचे आकर शारीरिक बोध भानों का अनुभव करना जीव दशा है। मेरे अनुभव में आया है कि जबतक कोई आदमी जैसा कि मैंने कल कबीर साहिब के शब्द के अनुसार कहा था सूली पर नहीं चढ़ता वह अपने जीव पने, मन पने, आत्मा पने, और अपनी आद अवस्था अर्थात् सुरत पने का अनुभव नहीं कर सकता, मैं सोचता हूं कि फकीर ! तुमने इतनी ऊंची बातें कह के क्या किया ? कौन समझेगा तेरी इस बात को ? दोस्तों ! मैंने किसी को समझाने के

लिए यह काम नहीं किया। मेरे अन्तर एक जनून या उन्माद था जिस तरह कोई आदमी जब कोई नई वस्तु देखता है या उसको किसी नई चीज का पता लगता है तो वह इसको प्रकट करने या दूसरों को बताने के लिए विवश होता है इस प्रकार मेरी भी यह विवशता है। मेरा मन यह मानता है कि जिस व्यक्ति को अपने आद या अपनी सुरत का पता लग जाता है और उसका अनुभव हो जाता है कि वह क्या वस्तु है वह मरने के बाद वापस इस संसार में नहीं आता लेकिन यह पता व्यक्ति को अकली तौर से नहीं बल्कि अमली तौर पर हो। अमली तौर से तो उसको होगा जो अपने अन्तर शरीर को भूलेगा, मन को भूलेगा, प्रकाश को भूलेगा और फिर जब वह ऊपर जा के शब्द को पकड़ेगा तब उस को पता लगेगा कि वह क्या है ? मुझे यह पता नहीं कि मेरा अनुभव ठीक है या गलत है मगर सन्तों की वानियों से मुझे विश्वास हो गया है कि मेरा अनुभव ठीक है। कबीर साहिब ने कहा है :---

उत ते कोई न आया जासे पूछूं जाय।
इतसे सब कोई जात है भार लदाय लदाय ॥

उत ते सतगुरु आया जाकि बुद्धि मति धीर।
भवसागर के जीव को खह लगवे तीर ॥

फिर कबीर साहिब यह भी कहते हैं :—

'बहुरि नहिं आवना या देश।"

मगर वह शर्त क्या रखते हैं :—

नाना भेष बनाए सभी मिल ढूंढ फिरे या देश
कहै कबीर अन्त न पैहो बिन सतगुरु उपदेस

वह कहते हैं कि इन्सान इस बात की खोज करता है कि मैं कौन हुं मेरा मालिक कहां है या परमात्मा क्या है ? सारा संसार ढूंढते २ मर गया मगर सतगुरु के उपदेश के बिना किसी को कुछ पता नहीं लगा।

अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूं कि सतगुरु ने क्या उपदेश दिया ? सतगुरु नें यह उपदेश दिया कि सुमिरन ध्यान और भजन करो। इससे क्या होगा ? सुमिरन करने से देह को भूल जाता है। अजपाजाप करने से देहाध्यास नहीं रहता। जो व्यक्ति प्रकाश को देखता है उसके मन के विचार समाप्त हो जाते हैं। जो आदमी शब्द को सुनता है वह आत्मानन्द से ऊपर चला

जाता है। तो कोई भी आदमी इस गुत्थी को नहीं सुलझा सकता जब तक कि वह साधन करके उस लक्ष्य तक न पहुंच जाए जहां न देह, न गेह न मन और न माया है तब उसको असलियत का का ज्ञान होगा। तो राए साहिब सुरेन्द्र नाथ के सम्बन्ध में दावा तो नहीं करता किन्तु उसके पत्रों से और उसके भावों और विचारों से सिद्ध होता है कि जो अनुभव और ज्ञान हजूर दाता दयाल जी महाराज की २१ किताबें अंग्रेजी में अनुवाद करने से उसको प्राप्त हुआ उसके लिए मेरी समझ में कोई आना जाना बाकी नहीं रहना चाहिए। यह मैं सिद्धान्त की बात कहता हूं मगर दावा नहीं करता। उसकी वर्णन शैली और थी और मेरी और है। तो आज उसकी स्मृति में अपने कर्म भोगवश उन सब संसारियों को जो इस जनून में हैं कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं और कहां से आए हैं और कहां जाएंगे उनको कह देना चाहता हूं कि मेरे अनुभव में यह आया है कि न कोई आता और न कोई जाता है मगर इस बात का अनुभव केवल उस आदमी को होता है जो इस जीवन में

सूली चढ़ा हो अर्थात् जिसने तन मन और प्रकाश से परे जाकर असलियत का अनुभव किया हो वह वापस नहीं आएगा । दूसरों का उनकी वासनाओं और विचारों के कारण वापस आना अनिवार्य है ।

संगत मण्डी भटिण्डा से एक आदमी दिवानचंद गोयल यहां आया हुआ है उसने एक घटना बताई कि हमारे समीप एक गांव में ५-६ वर्ष का बच्चा है वह कहता है कि पहले जन्म में वह अमुक गांव में अमुक आदमी का लड़का था १८-१९ बर्ष की आयु में स्कूटर पर जा रहा था तो उसका सिर दुर्घटना से फट गया । उसको उठाकर रेलवे स्टेशन के समीप बैंच पर लिटा दिया गया । वहां उसको एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी वह कह रही थी कि मेरे कोई लड़का नहीं है । मैंने विचार किया कि मैं इस स्त्री के यहां जन्म लूं । तब मैं इनके यहां पैदा हुआ हूं । उसकी बातों की जांच की गई जो कि ठीक सिद्ध हुई । इसलिए आवागमन के चक्कर से यदि कोई बच सकता है तो केवल वह, जिसने कि पूरे गुरु से उपदेश लिया हुआ है और साथ ही वह इस ज्ञान और उपदेश पर चला हो और उसको

असलियत का अनुभव हो चुका हो ।

सन्तों के मार्ग का जो ऊंचे दरजे का नाम है वह चौथे पद में रहता है । यदि किसी ने नाम भी लिया हुआ है या उपदेश भी लिया हुआ है यदि इस जीवन में वह नाम तक नहीं पहुंचा अर्थात् शब्द में नहीं गया तो उसका आवागमन समाप्त नहीं होगा । इसलिए जहां हम गुरु धारन करते हैं वहां हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम जीवन में यदि सदा नहीं तो कम से कम दो चार वार अवश्य सूली पर चढ़ कर देखें ताकि हमको अनभव हो जाए और उस अनुभव के आधार पर हम जीवन व्यतीत कर सकें । यह मेरा अनुभव है ।

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो ! मैं किसी बात का दावा नहीं करता । जजून सिर पर सवार था और सारी आयु इस जजून में खो दी । अपने कर्म भोगवस कि अपना अनुभव कह जाऊंगा या हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना मैं यह काम करता हूं ।

वा दिन की कछु सुध कर मन मां
जा दिन लैचलु लैचलु होई, ता दिन संग चलै नहिं कोई
तात मात सुत नारी रोई, माटी के संग दिए समोई
सो माटी काटेगी तन मां।
उलफत नेहा कुलफत नारी, किसकी बीबी किसकी बांदी
किसका सोना किसकी चांदी. जा दिन जम ले चलि है बांधी
डेरा जाय परै वहि वन मां।
टाँडा तुमने लादा भारी, बनिज किया पूरा व्यौपारी
जुवा खेला पूंजी हारी, अब चलने की भई तयारी
हित चित मत तुम लाओ धन मां।
जो कोई गुरु से नेह लगाई, बहुत भांति सोई सुख पाई
माटी में काया मिलि जाई, कहैं कबीर आगे गोहराई।
सांच नाम साहिब का संग मां

मैं कई बार सोचता हूं कि फकीर! तुमने मन्दिर बना लिया क्या तुमने अपने ऊपर भार नहीं लिया है। पेट भरने के वास्ते कमाने के लिए सबकी विवशता है क्योंकि यदि कमाएं नहीं तो पेट नहीं भरता लेकिन मानवता मन्दिर बनाने से तुमको क्या लाभ। क्या तुम फंसे नहीं? कई बार तो यह विचार आता है कि मैं फंसा हुआ हूं और कई बार यह विचार आता है कि नहीं। क्योंकि जो काम हम किसी की आज्ञावस करते हैं, उसमें

अपना पना नहीं होता और उसका कोई बोझ नहीं होता। इसलिए जब यह विचार आता है कि मैंने मन्दिर क्यों बनाया है तो आत्मा पर कोई बोझ नहीं पड़ता है। जीवन नाम ही काम का है और काम के बिना जीवन नहीं है। जो काम निष्काम किया जाता है उसमें कोई भार नहीं रहता।

मेरे भाई ने पहले जितना काम किया वह अपने नाम और दाम के लिए किया। फिर Retire होने के बाद वह इस ओर लग गया। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि बेकार मत रहना। वह उनकी किताबों का अनुवाद करने में लग गया। इसलिए मेरा विचार है कि उसकी गति अच्छी होनी चाहिए। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि मालिक उसको अपनी जात में मिला ले।

सबको राधास्वामी

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महाराज

मानवता मंदिर होशियारपुर

समय सायंकाल दिनांक १० सितम्बर १९७४

(राए साहिब सुरेन्द्र नाथ जी को श्रद्धांजली)

मौज की बात है कि इस एक माह में मुझे अपने तीन प्यारे सज्जनों के इस संसार से चले जाने पर श्रद्धांजली देने का अवसर मिला। एक श्री मामचन्द जी दूसरे संत कृपालसिंह जी महाराज और तीसरे मेरे छोटे भाई राएसाहिब सुरेन्द्र नाथ जी। मामचन्द जी ७ अगस्त को, संत कृपालसिंह जी २१ अगस्त को और राए साहिब सुरेन्द्र नाथ जी ६ सितम्बर १९७४ को चोला छोड़ गए।

मैं सोचता हू कि श्रद्धांजली देने से मरने वालों को कुछ फायदा भी पहुंच सकता है या यह इन्सान के अपने ही मन का भाव है ? बिज्ञान के इस युग में जब हम देखते हैं कि हमारी बातचीत बिजली की शक्ति से टैलीवीजन के द्वारा या रेडियो द्वारा

लाखों मील दूर चान्द तक पहुंच सकती है और टैलीपैथी द्वारा एक आदमी एक जगह बैठा हुआ अपने विचार की धारा को हजारों मील चाहे वह कहीं भी हो पहुंचा सकता है जैसे कि कई इलाज करने वाले मिसमरेजम द्वारा दूर बैठे हुए बिमारों का इलाज अपने विचार से करते हैं।

आज पण्डित पुरुषोत्म दास जी आए। उनकी लड़की भी उनके साथ थी। राए साहिब सुरेन्द्रनाथ इनको पिता के समान मानते थे और उनकी सेवा किया करते थे। लड़की ने बताया कि सात सितम्बर को प्रातः पिताजी जागे तो उन्होंने बताया कि रात में मैंने एक भयानक स्वप्न देखा और मैं घबरा गया। वह प्रातः भी घबराहट में थे कहने लगे कि सब साथी जा रहे हैं। उन्होंने और भी कई बातें घबराहट में कहीं।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक किताब में लिखा है कि जब उनकी लड़की गांव में मरी तो उस समय वह लाहौर में थे उस समय उनकी लड़की ने उनको आवाज दी कि पिताजी ! मैं जा रही

हूं। ऐसे ही बहुत सी घटनाएं सुनने में आती हैं लेकिन यह वहां होता है जहां आपस में मोह होता है यह विज्ञान का नियम है। मेरा अपने भाई के साथ मोह नहीं था इसलिए उनकी मौत के बारे में मुझे कोई दृश्य नजर नहीं आया जिससे मुझे यह पता लगता कि उनका शरीर छूट गया है। जब हजूर दाता दयाल जी महाराज का चोला छूटा तो उस रात मुझे दृश्य नजर आए कि उनका चोला छूट गया है। वह दृश्य क्यों नजर आए ? क्योंकि मेरा उनके शरीर के साथ मोह था। मोह और चीज है और प्रेम और चोज है। मोह में निजी स्वार्थ होता है और प्रेम में निजी स्वार्थ नहीं होता।

यदि सच पूछो तो मुझे उनकी मौत से अत्यन्त प्रशन्नता हुई। क्यों ? मैं यह जानता हुं कि यहां से सबने चले जाना है। वह काफी समय से बीमार रहते थे और मैं उनको लिखा करता था कि बच्चा ? तुमको जीवन में कोई शारीरिक कष्ट और आर्थिक कठिनाई न हो और तू शान्त चित्त रहे।

इन असूलों के अनुसार मेरा विचार है कि

श्रद्धांजली देने वालों और श्रद्धा से उनकी क्रिया कर्म करने वालों और श्राद्ध करने वालों का प्रभाव मरने वालों पर अवश्य होना चाहिए क्योंकि यदि मरने वाला मोक्ष को प्राप्त नहीं हुआ तो उसकी रूह कहीं न कहीं तो अवश्य होगी और विचार शक्ति का प्रभाव दूर दूर तक पहुंचता है। लोक लोकान्तर तक जाता है विज्ञान सिद्ध करता है कि ऊपर से ऊपर के बड़े बड़े सूर्य लोकों की किरणें यहां तक पहुंचती हैं। यदि वह यहां तक आ सकती हैं। तो वहां भी जा सकती हैं इसलिए मैं कह देना चाहता हूं कि हरएक आदमी को अपने प्यारे और संबन्धियों की मौत पर श्रद्धांजली देनी चाहिए किन्तु वह रसमी तौर अर्थात् प्रथा के रूप में न हों वह सच्चे दिल और सच्चे हित से हो। मेरे विचार में जो आदमी अपने स्वार्थ के वश किसी को श्रद्धांजली अर्पण करते हैं उसका शायद इतना प्रभाव न हो क्योंकि इस श्रद्धांजली में श्रद्धांजली देने वाले के दिल में वह निजी स्वार्थ जो उसने मरने वाले से उसके जीवन में प्राप्त किया हुआ है बतौर धन्यवाद सम्मिलित होता है । इसलिए हिन्दुओं में क्रिया

कर्म करने वाले ब्रह्मण होते हैं उनको महा ब्रह्मण या ब्रह्म में रहने वाले कहा जाता है वह निष्काम होते थे और निष्काम भाव से वह शुभ भावना देकर उनकी गति करते थे किन्तु आजकल के पण्डे वैसे नहीं होते । यह स्वार्थी हैं । दूसरों से धन सम्पत्ति और क्रिया कर्म का सामान लेने की इच्छा से कई कुछ करते हैं । इसलिए मेरे विचार में इनसे क्रिया कर्म या कोई कर्म काण्ड कराना केवल एक रसम हैं । इससे कोई विशेष लाभ नहीं है ।

- मुझे प्रशन्नता है कि मैंने इन तीन सज्जनों को श्रद्धांजली दी । पता नहीं कि मेरी श्रद्धांजली के फूल उनकी रूहों तक पहुंचे या न पहुंचे किन्तु मैंने अपना भाव अपने सत्संगों द्वारा प्रकट कर दिया । अब मैं सोचता हूं कि फकीर ! तुमने अपना भाव तो प्रकट कर दिया अब इसको किताबी शक्ल क्यों देना चाहते हो ? क्या तेरे अन्तर यह वासना तो नहीं कि लोग तेरे अनुभव को पढ़कर या सुनकर तेरी प्रशंसा करें । मैं अपने मन को टटोलता रहता हूं । दोस्तो ! अब संसार की मान बड़ाई और यश कीर्ति का विचार तो मेरे दिल से जाता ही रहा ।

मेरी समझ में आया है कि हम जो कुछ भी यहां कर रहे हैं यह हमारे प्रारब्ध कर्म का फल है या यह प्रकृति का खेल है हम सब इसमें घसीटे जा रहे हैं। जैसे जैसे किसी आदमी के ग्रह पढ़े हुए हैं उनके अनुसार वह वैसा करने पर विवश हैं किन्तु इतना विचार मुझे अवश्य आता है यह मेरा अहंकार समझो या जो इच्छा समझो कि मेरे विचारों से पढ़े लिखे और समझदार लोगों के भ्रम और संशय दूर हो जाते हैं मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि मेरे इन विचारों और अनुभवों से मेरे अपने भ्रम और शंशय दूर हो गए। इन्सान जो कुछ समझता है वह इसके विचारों भावों और संकल्पों को सन्तुष्टी देता है या उसको घबराहट में डाल देता है। इसलिए मैं यह श्रद्धांजली अपने कर्म भोगवश या मौज अधीन संसार में प्रकट कर रहा हूं। इस प्रकार की वर्णनशैली ज्ञान हकीकत असलियत और सच्चाई के प्रचार का साधन भी है।

मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि श्री मामचन्द सन्त कृपालसिंह जी महाराज और राए साहिब सुरेन्द्रनाथ जी की रूहें यदि कहीं संसार में हों तो उनको शांति मिले।

फक़ीर

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक ११ सितम्बर १९७४

(राए साहिब सुरेन्द्रनाथ की पुस्तक के लिए)

मन फूला फूला फिरै जगत में. कैसा नाता रे ।।
माता कहे यह पुत्र हमारा, बहिन कहे वीर मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, नारि कहै यह नर मेरा ।।
पेट पकरि के माता रोवै, बांहि पकरि के भाई ।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई ।।
जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोए दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर वासा ।।
चार गजी चरगजी मंगाया. चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगाया, फूंक दियो जस होरी ।।
हाड़ जरै जस लाकड़ी को, केस जरै जस घासा ।
सोना ऐसी काया जरि गई, कोई न आयो पासा ।।
घर की तिरिया ढूंढ़न लागो ढूंढ़ि फिरी चहुं देसा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, छांड़ो जग की आसा ।।

राधास्वामी ! जब कोई मर जाता है तो उसका शोक मनाया जाता है । मेरा भी भाई मर गया । कबीर साहब का शब्द मैंने सुना । आप लोग सुनें

या न, मेरा इससे कोई मतलब वहीं मुझे तो अपने आप से मतलब है। मुझे याद आता है कि जब मैं हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के दरबार में जाया करता था तो यह शब्द इकतारे पर गाया करता था। वह मुझे बड़े प्रेम से कहा करते थे कि फकीर ! शब्द सुनाओ तो मैं यह शब्द गाया करता था। उस समय तो मुझे पता नहीं था लेकिन अब अनुभव हो गया। मां मर गई, बाप मर गया, स्त्री मर गई, एक दो बच्चे भी मर गए, मामचन्द साथी था वह भी चला गया, सन्त कृपालसिंह जी महाराज का मैं आदर करता था; वह भी चले गए। अब स्वाभाविक ही मेरे दिल में यह विचार हर समय रहता है कि जगत का नाता छोड़के हम कहां जाएंगे ? इस शब्द में लिखा हुआ है कि हंस अकेला कहाँ जाता है ? मैं अकेला होने का यत्न करता रहता हूं ? कहां जाऊंगा ? पता नहीं।

रात को श्रीमति सम्पत शर्मा (राए साहिब सुरेन्द्रनाथ के बड़े लड़के शिवेन्द्र की धर्मपत्नि) मेरे घर में आई बातचीत होती रही। राय साहिब सुरेन्द्र नाथ के क्रिया कर्म का प्रश्न था। उसने कहा

कि हम निर्धन हैं, इसलिए आप मेरे पति को तार दे देवें कि वह होशियारपुर आ जाए ।

मुझे विचार आया कि क्या क्रिया कर्म का बोझ मुझ पर पड़ेगा ? फिर मुझे अपने पिताजी की बात याद आई । जब १९१४ में वह नौकरी से रिटायर हो के घर जाने लगे । तो उन्होंने मुझे चार उपदेश दिए थे ।

(१) रेल के कर्मचारियों को कभी चारज मत करना अर्थात् बिना टिकट यात्रा करने वालों से कराया न लेना और यदि करो तो शिकायत मत करना ।

(२) जिस स्टेशन पर रहो उस क्षेत्र के १० नम्बर के बदमाशों से कभी मत बिगाड़ना अर्थात् विख्यात दुराचारियों से प्रेम रखना ।

(३) पोलिस विभाग वालों से न शत्रुता और न मित्रता रखना (यद्यपि वह स्वं पोलिस में नौकरी करते रहे)

(४) सुरेन्द्रनाथ का बाज़ू मेरे हाथ में दे दिया और कहा कि देखो । तुम स्टेशन मास्टर हो कोई

यह न कहे कि तुम्हारा भाई गलियों में मारा मारा फिर रहा है।

मैंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपने भाई से सारा जीवन बहुत अच्छा वर्ताव किया और उसका हितैषी रहा। उसके साथ जीवन बिता दिया। अब उसका अन्तिम समय आया। मैंने सोचा कि अच्छा अब इसका क्रिया कर्म भी मैं ही अपनी शक्ति के अनुसार कर दूंगा।

रात को मैं सोचता रहा कि इन्सान कहां से आता है और कहां जाता है। फिर मैं सो गया। रात को एक दृश्य देखा। एक बजे के लगभग मेरी आंख खुली तो मैं चकित हो गया। देखा कि मैं अपने देश जा रहा हूं। सड़क पर चल रहा हूं दो चार और आदमी भी मेरे साथ हैं। इतने में किसी ने कहा कि इस मार्ग पर मत जाओ अन्यथा डाकू लूट लेंगे। हमने सड़क छोड़ दी और एक पगडण्डी पर चलने लगे। चलते चलते फिर हम सड़क पर पहुंच गए। आगे दस पन्दरह आदमीं पौलिस वाले खड़े थे। उनमें से कुछ आदमी तो कहने लगे

कि इनको पकड़ लो और कुछ आदमी कहने लगे कि इनको पकड़ो मत। इनको समझा देंगे। फिर पौलिस वाले कहने लगे कि इस रास्ते पर मत चलो आगे खतरा है। फिर हम दूसरे रास्ते पर चले। हमको फिर ज्ञात हुआ कि आगे नदी में बहुत पानी आ रहा है। हमने फिर मार्ग बदला और एक नगर में पहुंच गए। वहाँ कई आदमी मिले जो हमारे जान पहचान वाले थे उन्होंने पूछा कि आप कैसे आए ? मैंने उत्तर दिया कि अपने घर जा रहे हैं। वह सब भले आदमी थे और कोई किसी को दुख नहीं देता था और उनमें पवित्रता थी। उन्होंने कहा कि हम आपको टांगा कर देते हैं आप पैदल क्यों जा रहे हैं। हम टांगे में बैठ गए डा. परस राम (मानवता मन्दिर कोषाध्यक्ष) भी साथ था। ऐसे २ दृश्य हमने देखे कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। कुछ दूर जाने के बाद डा. परस राम ने कहा कि आगे मार्ग बहुत खराब है इसलिए आप टांगे से उतर जाइए। फिर दूसरे मार्ग पर चलने लगे आगे बहुत रोशनी थी। वहां बहुत आदमी मिले और मेरा स्वागत किया।

मुझसे आने का कारण पूछा तो मैंने कहा कि अपने देश जा रहा हूं और उनको मार्ग का सारा समाचार बताया। फिर आंख खुल गयी।

जो कुछ देखा वह क्या था ? अपने ही मन के विचार। मेरे मुख से निकल गया :—

कौन है शादां यहाँ शादां फक्त जाते फकीर
खुश नहीं हरगिज वो नगर मालो जर वाले अमीर

इसके बाद मेरी आंख खुल गई। सोचा कि यह क्या है ? अपनी बुद्धि के अनुसार कहता हूं कि जब तक मन साथ है तब तक पाप पुण्य नेको बदी सब विद्यमान रहते हैं। मैंने वह दृश्य क्यों देखा ? क्योंकि मेरे अन्तर सच्चाई है इसलिए मैंने वह धर्मात्मा देखे और क्योंकि अभी तक कुछ मेर तेर का प्रश्न है, इसलिए पहले गलत मार्ग पर गया। तो जो आगे अकेला जाना है जैसे कि कबीर साहिब ने कहा है, मैंने वह आगे का रास्ता नहीं देखा। मैं फिर अभ्यास में चला गया। सोचता हूं कि हंस अकेला कहां जाएगा ?

पेट पकरि के मातारोवै, बांहि पकरि के भाई।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हस अकेला जाई॥

अकेले का मार्ग कौन सा है ? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा । ज्ञात नहीं मेरा अनुभव ठीक है या गलत है । अपने विचारों को छोड़ कर और भूल कर अपने चेतन रूप में स्थित हो जाना अकेले हो जाना है । जब कोई इस अवस्था में जाता है तब इस बात की समझ आती है । जो कुछ मैंने देखा वह क्या था ? अण्ड और ब्रह्मण्ड अर्थात् मन का ही खेल देखा । तो जब तक कोई इससे परे नहीं जाएगा कोई इस बात को समझ नहीं सकता । इस शब्द के अनुसार जब हंस अकेला जाता है तो गुरु साथ कैसे जाएगा । सारी दुनिया गुरु गुरु चिल्लाती है । उस अवस्था में न तो गुरु है, न चेला है, न स्वामी है और न सेवक है । न सृष्टा है न सृष्टी है । जो ऐसा नहीं समझते या जिनको यह ज्ञान नहीं है वह सब अज्ञान में हैं । जहां हमने लौट कर वापस जाना है वहां कबीर साहब और स्वामी जी महाराज की बानी के अनुसार और मेरे अनुभव के अनुसार न गुरु है और न चेला है ।

पंडित पृथ्वीनाथ ! तुम आचार्य हो । सत्संग

कराते हो। लोगों को अपने जाल में मत बांधना। गुरु का पद तो इसलिए ऊंचा है कि वह जीव को इस चक्कर से निकालता है गुरु वह है जो जीव को पिण्ड अण्ड और ब्रह्माण्ड से निकाल दे। यह इसलिए निकालता है कि तुम अपने देश को वापस जा सको लेकिन संसार गुरु के साथ चिपट जाता है। धन्य बाबा सावनसिंह जी, धन्य बाबा फकीर और धन्य संत कृपालसिंह जी ऐसे लोग कभी पिण्ड, अण्ड और ब्रह्मण्ड से पार नहीं जा सकते।

निर्मला ! बेटी तुम मुझसे प्यार करती हो और मैं भी तुम्हारे प्यार का आदर करता हूं लेकिन मैं यह चाहता हूं कि तुम आवागमन से निकल जाओ। इसलिए प्रकाश और शब्द को पकड़ो। जो आदमी, नेकी करता है, परोपकार करता है और किसी को दुख नहीं देता वह धन्य है लेकिन आवागमन से वह भी नहीं बच सकता। जो आदमी परोपकार करता है और दूसरों की सेवा करता है वह सहस्त्र गूणा श्रेष्ठ और धन्य है लेकिन यदि वह चाहें कि वह अकेला हो के जाए तो कैसे जाएगा क्योंकि उसके साथ नेकी और परोपकार लगे रहेंगे और वह इसे

आद घर नहीं जाने देंगे। यही शास्त्र कहते हैं कि तीन गुण अथवा रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण है, यह तीनों ही डाकू हैं। तमो गुण मार देता हैं, रजोगुण तड़फा तड़फा के मारता है और सतोगुण मारता नहीं है वह सहायता करता है।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक कहानी लिखी है कि एक राजा का गुरु पण्डित था। राजा ने कहा कि मुझे ज्ञान दो और वह दे न सका। राजा ने कहा या तो ज्ञान दो यदि नहीं तो तुमको दण्ड दूंगा। पण्डित उदास हो के अपने घर में आया। उसकी लड़की ने उदासीनता का कारण पूछा। बाप ने सारा समाचार बताया।लड़की ने कहा कि राजा से कह दो कि मैं उसे ज्ञान दूंगी। राजा ने मान लिया। लड़की ने राजा से कहा कि जो मैं कहूंगी आपको करना होगा। लड़की ने राजा को और अपने बाप को पेड़ से बांधकर कोड़े मारने आरम्भ कर दिए। राजा ने कहा कि मुझे क्यों मारती हो। लड़की ने कहा कि मेरा बाप तो स्वयं बांधा हुआ है वह आपको स्वतन्त्र नहीं कर सकता। मैं तुम को स्वतन्त्र कर देती हूं। फिर उसने दोनों

के बन्धन खोल दिए ।

संसार के गुरु धर्म और पन्थ उस सार वस्तु को जो हमारे अन्तर में है उसको किसी विचार या ईष्ट के साथ बांधते हैं। कोई कहता है कि श्री राम की भक्ति करो, कोई कहता है कि श्री कृष्ण की भक्ति करो, कोई कहता है कि गुरु को पूजो और कोई कहता है कि ब्रह्मको मानो। यह जितने विचार देने वाले हैं यह हमारी असली वस्तु को बांधते हैं, यह स्वतन्त्र नहीं करते और जो निर्बन्ध गुरु हैं वह जीव को इन बन्धनों से ईश्वर, परमेश्वर, गुरुभक्ति, विचार योग और हठ योग आदि से छुड़ा कर स्वतन्त्र कर देता है। अहा ! आज मैं भाग्य-शाली व्यक्ति हूं कि मैं संतों के मार्ग में आया। मुझे समझ नहीं आती थी कि संतमत क्यों बड़ा है और इसने क्यों दूसरों का खण्डन किया। इस बात की अब समझ आई है।

रजो गुणी और तमोगुणी विचारों से आदमी का जीवन खराब हो जाता है लेकिन सतोगुणी विचार सांसारिक जीवन में आदमी की सहायता करते हैं। किन्तु हैं यह भी डाकू। कैसे ? एक

आदमी धर्म कर्म या परोपकार करता है या किसी की भक्ति करता है, है तो यह अच्छा लेकिन जब तक जीव का सम्बन्ध है या मोह धर्म कर्म के और परोपकार के साथ है वह भवसागर से पार नहीं जा सकता। इसलिए संतमत में जीव को पहले बुराइयों की ओर से हटाकर नेकी की ओर लगाया जाता है, क्योंकि मन को कहीं तो लगाना ही हैं। इसके बाद गुणातीत होने के लिए पूरा ज्ञान चाहिए और पूरे ज्ञान को प्राप्त करने के लिए पूरा गुरु चाहिए।

मंगलम् गुरु देव मूरति, मंगलम् पद पंकजम।
मंगलम् अव्यक्त अनुपम, मंगलम् भव गंजनम्॥
मंगलम् धुरपद निवासी, मंगलम् सत आसनम।
मंगलम् निर्वाण सदगति, मंगलम् जन रंजनम्॥

गुरु वह है जो धुरपद का वासी है। धुरपद क्या है? वह अवस्था जो गुणों से परे है और जहां जाकर हम एक हो जाते हैं। गुरु वह है जो इस एकपने के अहंभाव में भी नहीं आता।

मंगलम् ज्ञान स्वरूपम्, मंगलमृ आनन्द रूप।
मंगलम् चैतन्य सदनम्, मंगलम् सत सत्यभूत॥
मंगलम् योगिन्द्र मायातीत, मंगलम् सत दायकम्।

मंगलम् संसार सारम, अद्भुतम् मुनि नायकम् ॥

गुरु वह है जो मायातीत है और जो गुणों से ऊपर रहने वाला है लेकिन आजकल तो एक आध पुस्तक पढ़कर गुरु बन जाते हैं और सत्संग कराना आरम्भ कर देते हैं ।

मंगलम् त्रय गुण रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम ।
मंगलम् त्रय काल ज्ञाता, मगलम् भव नाशनम् ॥

गुरु वह है जो तीनों गुणों (रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से परे रहता है और त्रयकाल ज्ञाता है अर्थात् जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति और भूत, वर्तमान और भविष्यत के भेद को जानता है ।

आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त जो ।
मंगलम् करुणा सदन, शुभतत्व परम जगत प्रभो ॥

ऐसे गुण वाले व्यक्ति के गुण क्या हैं ? वह किसी के अवगुण नहीं देखता । उसमें करुणा होती है । वह जानता है कि जीव तीन गुणों में फंसे रहते हैं और माया के चक्कर में हैं । इसलिए वह इनके अवगुणों की ओर नहीं देखता है और उनको ऊंचा उठाने का यत्न करता है । यह गुण मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज में देखे ।

एक बार हजूर दाता दयाल जी महाराज मेरे पास सुनाम में आए । वह खाना खा रहे थे और मेरे बच्चों को भी खिला रहे थे। मैंने बाहर उस समय किसी आदमी से यह समाचार सुना कि अमुक गुरु का नौजवान लड़का किसी सत्संगत के चक्कर में आकर घायल हो गया है। मैं अपने घर में आया और आते ही बड़ी खुशी से यह समाचार हजूर दाता दयाल जी महाराज को सुनाया। उन्होंने घूरकर मेरी ओर देखा और फरमाया कि तुमको किसने फकीर बना दिया। तुम दूसरों के अवगुण देखते हो। संसार में कौन हैं जो अवगुण रहित है। उनकी बात सुनकर मैं बहुत लज्जित हुआ।

दूसरी घटना सुनो। जेहलम का एक बहुत बड़ा सेठ था। उसने एक वैश्या रखी हुई थी। जब कभी वह सेठ लाहौर में हजूर के पास आता और उसके साथ वह वैश्या होती तो हजूर दाता दयाल जी महाराज उठकर दोनों हाथ जोड़ कर उस वैश्या से कहते "माता जी राधास्वामी।"

तीसरी घटना। लाहौर जेल में एक डाकू कैद

था । उसने कई डाके डाले हुए थे और कई आदमी मारे हुए थे, उसको फांसी दी गई । प्रातः को जब उसकी फांसी के बारे में समाचार पत्रों में समाचार छपा तो रसाला मार्तण्ड का मैनेजर जो कि हजूर का नौकर था आया और उनसे कहने लगा कि महाराज ! आज संसार एक पापी आत्मा से मुक्त हो गया । मैं भी वहीं था । आप उठे और जेल की ओर मुंह करके और हाथ बांधकर कहने लगे कि ऐ सच्ची आत्मा ! मैं तुमको नमस्कार करता हूं । यह सुनकर मैनेजर मार्तण्ड ने कहा कि महाराज ! आप एक दुष्ट को जिसने इतने घोर पाप किए हैं, सच्ची आत्मा कह रहे हैं । आपने फरमाया कि मैं यह नहीं देखता कि उसने क्या काम किया है, मैं तो यह देखता हूं कि उसने जिस काम को प्रारम्भ किया है वह उसी में मर मिटा । मैं हूं कि जिस काम को मैंने प्रारम्भ किया मैं अभी तक उसी में फंसा हुआ हूं और उसको पूरा नहीं कर सका । हजूर दाता दयाल जी महाराज ने किसी सत्संगी की या किसी और की न कभी शिकायत की और न कभी किसी के अवगुण देखे । उन्होंने

मुझे भी एक बार लिखा था---

शिकायत करे वह संसारी---शिकायत न करे वह सारी ।

उन्होंने एक जगह लिखा है--

जो शिकायत करते हैं वह दुनियादार है।
जिनको शिकवा ही नहीं वह मरहमे असरार है।

मैं जब अपने और हजूर दाता दयाल जी महाराज के जीवन की तुलना करता हूं तो मैं अपने आप को बहुत पिछड़ा हुआ अनुभव करता हूं और अपने आप को कोसता हूं ।

आप परगटे इस जगत मैं जीव काज सुधारने।
शब्द नाव बनाय सुन्दर जीव दुःखित उभारने ॥

इस त्रिगुणात्मक जगत से निकलने का उपाय शब्द योग है । ध्यान योग करने वाला, बाबे फकीर का ध्यान करने वाला, हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज का ध्यान करने वाला, श्री रामचन्द्र जी या श्री कृष्ण जी या किसी देवी देवते का ध्यान करने वाला जन्म मरण से रहित नहीं हो सकता । हां उसको अच्छी योनि मिल जाएगी । इसलिए सन्तों के मार्ग में शब्द योग है । अन्तर की धुन को सुरत

से सुना जाए न कि मन से, मन से सुनने वाला भी चक्कर से नहीं बच सकता। पांच नाम वाला भी चक्कर से नहीं बच सकता। क्यों ? क्योंकि यह घण्टा, शंख, ओम् या रारंग सारंग यह भी तो प्रकृति के ही शब्द हैं। असली शब्द और हैं। सुरत वह वस्तु है जो मन में रहती हुई मन की साक्षी है। सुरत अपने आप रूप नहीं देखती जब वह मन में आ जाती है तब रूप को देखती है। यदि मन साथ नहीं है तो वह ध्यान कैसे करेगा। मन ही तो रूप बनाता है। इसलिए ध्यान करने वाले का चक्कर समाप्त नहीं होता और न ही दान पुन्य करने वाले का चक्कर समाप्त होता है। पाप करने वाले का तो होगा ही नहीं। धर्म कर्म करने वाले का चक्कर भी समाप्त नहीं होता। जब सुरत मन के साथ मिलकर किसी वस्तु को देख रही है, ज्ञान और विज्ञान कर रही है और गूढ़ से गूढ़ रहस्य को जान रही है वह आगे नहीं जा सकती। जो आदमी यह समझता है कि मैं गूढ़ से गूढ़ रहस्य को जानता हूं वह भी आगे नहीं जा सकता। इसलिए स्वामी जी महाराज ने कहा है कि वेदान्ती और सूफी भी पार नहीं जा सकते। पार

वह जा सकता है जो गूढ़ से गूढ़ रहस्य को जानते हुए अपने आपको इस ज्ञान से ऊपर ले जाता है और अपने अनुभव का अभिमान नहीं करता। मैं जो यह गुरुआई करता हूं यह भी फंसने का साधन है किन्तु क्योंकि यह मेरा कर्म भोग है और गुरु आज्ञा है इसलिए मैं फंसा हुआ हूं। यह मेरा प्रारब्ध कर्म है। इसका प्रमाण यह है कि मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं। मैं गुरु का काम भी कर चला और गुरु भी नहीं बना।

पण्डित पृथ्वीनाथ ! तुम आए हो और तुम आचार्य हो मैं जानता हुआ भी कभी कभी फंस जाता हूं। अपना ईष्ट गुणातीत और ऊंचे से ऊंचा रखो। घण्टा, संख और मुरली आदि तुमको शांति नहीं दे सकते यह तुमको शान्ति के लिए सहायता दे सकते हैं और सांसारिक सुख दे सकते हैं लेकिन इससे तुम उस अवस्था में नहीं जा सकते कि जहां से फिर वापस इस चक्कर में न आओ। उस ऊपर के शब्द को कोई सतनाम कहता है, कोई निज नाम कहता है और कोई राधास्वामी कहता है भाव तो सबका एक ही है किन्तु शब्द जुदा २ हैं।

हजूर दाता दयाल जी महाराज कहा करते थे कि अपना इष्ट ऊंचा रखो । गिरते पड़ते कभी न कभी तो पहुंच ही जाओगे । अपना संकल्प दृढ़ रखो लेकिन यदि लक्ष्य का ही पता नहीं तो जाओगे कहां ? इसलिए सन्तों ने जीवों को पूर्ण इष्ट दिया है और बताया है कि हम Oneness से आते हैं और हमने वहां ही वापस जाना है ।

मन फूला फूला फिरे जगत में, कैसा नाता रे ।
पेट पकरि के माता रोवै, बाँहि पकरि के भाई ।
लपटि झपटि के तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई ॥

क्योंकि मुझे यह संस्कार मिले हुए हैं । इसलिए मैंने मां बाप लड़के और स्त्री के मरने का कोई शोक नहीं किया । कल का पता नहीं मेरे बिचार बदल जाएं या मेरे साथ क्या हो । हंस ने तो अकेला ही जाना है । यदि तुम नेकी और परोपकार करते रहोगे और उसमें यदि तुमको अहंभाव आ जाएगा तो तुम फंस जाओगे । मैं यह नहीं कहता कि तुम नेकी और परोपकार मत करो । यह करो और अवश्य करो और करने चाहिए । जैसे हम रोटी खाने के लिए विवश है, पानी पीने के लिए विवश

हैं और टट्टी जाने के लिए विवश है, ऐसे ही नेकी और परोपकार भी विवश हो के करो। इनमें फंसो नहीं।

हंस अकेला कब होगा ? जब वह पिण्ड अण्ड और ब्रह्मण्ड से परे जाकर निज नाम या राधास्वामी नाम में जाएगा। निर्मला ! तू प्यार करती है बेटी ! बहुत अच्छी बात है। निष्काम प्रेम और प्यार करने वाला आदमी प्रसन्नता से जीवन गुजार देता है। संतान को निष्काम भाव से पालो मां बाप की निष्काम सेवा करो। गुरु से निष्काम प्रेम करो यदि तुम यह समझो कि बावे फकीर या किसी और गुरु की बाह्य सेवा से तुम पार हो जाओगे तो यह असंम्भव है। सतपुरुष के पास आने जाने से और उसके सत्संग से तुमको समझ आ जाएगी, सार तत्व और भेद का पता लग जाएगा और फिर तुम संसार में फंसोगे नहीं। फिर जीवन कैसा हो जाएगा।

जैसे जल में कमल निरालंव मुर्गावी निशानिए।
सुरत शब्द भवसागर तरिए नानक नाम वखानिए ॥

मुरगावी पानी में रहती है किन्तु भीगती नहीं। ऐसे ही किसी पूर्ण पुरुष के बचन सुनकर, समझ कर

और उन पर अमल करने से आदमी संसार में फंसता नहीं। जो आदमी मंदिर में नौकरी करते हैं यदि उनको भी समझ विवेक आ जाए तो उनको भी बहुत लाभ हो सकता है।

षठ सुधरें सत्संगत पाए।

सबको राधास्वामी

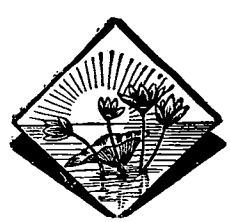

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १२ सितम्बर १९७४

अब कहं चले अकेले मीता, उठि क्यों करहू न घर की चेता।
खीर खांड घृत पिंड संवारी, सो तन लै बाहर करि डारा॥
जेहि सिर रचि रचि बांधिसु पागा, सो सिर रतन विडारैं कागा।
हाड़ जरै जस सूखी लकरी, केस जरै जस तृन की कूरी॥
आवत संग न जात संघाती, कहा भए दल बांधे हाथी।
माया कै रस लेन न पाया, अन्तर जम बिलार होई धाया।
कहै कबीर नर अजहुं न जागा, जम का मुंगरा बरसन लागा॥

राधास्वामी! मेरा सारा जीवन किसी धुन में बीत गया। मैं यह देखना चाहता था कि मेरा आद घर कहां है। हिन्दू जाति में जन्म लेने के कारण यह विचार मिला हुआ था। कि इस संसार का बनाने वाला कोई है। रामायण से यह विश्वास हो गया था कि वह मालिक मानव रूप में इस संसार में आता है। इस विश्वास के द्वारा मौज

मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणकमलों में ले गई उन्होंने मेरे ध्यान को युक्तिपूर्वक भगवान, ईश्वर या परमात्मा की भक्ति की ओर से हटाकर गुरुमत की ओर लगाया और नाम दान दिया। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज का यह उपदेश मेरे पहले संस्कारों से बिलकुल भिन्न था और मेरे लिए यह एक नई वस्तु थी इसलिए मैंने प्रण किया था कि जीवन में इस मार्ग पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा संसार को बता जाऊंगा। पता नहीं जो मेरी समझ में आया वह ठीक है या गलत है।

मेरे छोटे भाई राए साहिब सुरेन्द्र नाथ का शरीर छूट गया। सोंचता हूं कि वह कहां गया। अपने बारे में भी सोचता रहता हूं कि मरने के बाद कहां जाऊंगा। रात को भी यही विचार रहा और अब समाधी में था कहां जाने का प्रयत्न करता हूं? मेरे अन्तर जो वस्तु है वह कहां जाना चाहती है? वह सब कुछ भूल जाना चाहती है और बहुधा मैं भूल जाता हूं। हजूर दाता दयाल जी महाराज का

उपकार है लेकिन सत्संगियों का मैं बहुत आभारी हूं। इनके अनुभव ने कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे अपने घर की खोज करने के लिए विवश होना पड़ा। समझ आ गई कि अन्तर में जो रंग रूप भाव विचार और संकल्प पैदा होते हैं इनको भूल जाओ। यह सब माया है। मैं इनको भूल गया ? आगे क्या है ? कबीर साहिब ने शब्द तो लिख दिया, हम भी पढ़ लेते हैं और आप भी पढ़ लेते हैं ;—

अब कहं चले अकेले मीता, उठि क्यों करहु न घर की चेता

मैं जब प्रतिदिन अभ्यास में जाता हूं तो चाहता हूं कि पीछे वापिस न आऊं। मैं अकेला होने के लिए विवश हूं। क्यों ? मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज को अपना इष्ट मानता था और उनके रूप को देखता था। उनका सहारा लेता था लेकिन जब से सत्संगियों ने यह सुना कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है। उनको दवाईयां बता जाता है, उनको नदी से डूबते हुए बचा जाता हैं, किसी को मरते समय ले जाता है लेकिन मैं तो जाता नहीं और नही मुझे इन घटनाओं का कोई ज्ञान होता

है । तो इस ज्ञान ने जब मैं अपने अन्तर जाता हूं मुझे अकेला होने के लिए विवश कर दिया ।

ऐ संसार वालों । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इसलिए मैं कहता रहता हूं यद्यपि मैं जानता हूं कि संसार को मेरे इस अनुभव की आवश्यकता नहीं । संसार तो संसार के चक्कर में आया हुआ है । अब मेरे भाई की कर्म क्रिया का प्रश्न आया । मैं तो करना नहीं चाहता था । श्री कृष्ण जी ने अर्जुन से कहा था कि मुझे कर्म धर्म करने की आवश्यकता नहीं लेकिन यदि मैं कर्म धर्म नहीं करूं तो संसार पथभ्रष्ट हो जाएगा और मरयादा भंग हो जाएगी । इसलिए मैं भी अपने भाई का क्रिया कर्म करूंगा ।

अब प्रश्न यह है कि यह जितने संस्कार संसार में किए जाते हैं क्या यह आवश्यक हैं ? यह उनके लिए आवश्यक हैं जो जीवन में अपने आद घर की खोज नहीं करते जो अपने आद घर की खोज करता है वह तो दिवाना बन के रहता है । बच्चे को यदि तुम विद्या का संस्कार न दोगे या यदि तुम उसको यह न बताओगे कि यह तेरा बाप है, यह तेरी मां है

और यह तेरा भाई है वह जीवन में किसी काम का नहीं रहेगा। इसलिए पूर्वजों ने जो संस्कार बनाए हुए हैं यह आवश्यक हैं। संस्कार क्या है ? किसी को विचार देना। यदि बच्चे को संस्कार नहीं दोगे तो वह संसार के योग्य नहीं रहेगा सन्तमत में जहां कर्म धर्म का खण्डन किया गया है वह जीवन की अन्तिम अवस्था का विचार सामने रख कर किया गया है। विना संस्कार लिए सांसारिक जीवन व्यतीत नहीं हो सकता। मौत का भी विचार दिया जाता है ताकि मरने वाला फिर इस चक्कर में न आए इसलिए क्रिया कर्म और दूसरे संस्कारों का भी एक विचार दिया जाता है क्या विचार दिया जाता है कि जो व्यक्ति इस जीवन में आप मर गया और आखिरी संस्कार ले गया उसके लिए कोई क्रिया कर्म करो या न करो कोई अन्तर नहीं पड़ता। इस वास्ते सन्यासियों का कोई क्रिया कर्म नहीं किया जाता। सन्यासी कौन है ? जो जीवन में सब कुछ त्याग कर जाता है। मैं प्रयत्न करता रहता हूं कि जीवन में ही अपना क्रिया कर्म कर जाऊं अर्थात् मेरे मस्तिष्क पर जितने संस्कार पड़े

हुए हैं उनको छोड़ जाऊं। संस्कारों को छोड़ना ही सन्तमत की शिक्षा है। शरीर, मन, प्रकाश और शब्द को भी भूल जाओ।

अब कहं चले अकेले मीता, उठि क्यों करो न घर की चेता

अकेला तो मैं हो जाता हूं लेकिन मुझे अकेला किसने किया ? हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया ने। मुझे समझ नहीं आती थी। उन्होंने मुझे गुरु पदवी दे कर मेरी आंख खोल दी। जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो फिर वह जो सुरते चढ़ाता है या किसी विपत्ति से बचाता है या लोगों के और काम करता है वह कौन है ? वह उन आदमियों का अपना ही विचार और विश्वास है उनके अपने ही संस्कार हैं। इसलिए यदि मैं अपने विचारों और संस्कारों को छोड़ जाऊं तब ही मैं अकेला हूंगा। आगे क्या है ? कुछ है किन्तु है वर्णन से बाहर है ? उसका वर्णन करने के लिए संसार की कोई भाषा नहीं है। उसको केवल वह जान सकता है जो मर के देखे। मरना क्या है ? संस्कारों को छोड़ जाना और सब कुछ भूल जाना।

बाल बच्चों को सँबन्धियों को और गुरु को भी भूल जाना। एक आदमी मरते समय गुरु को याद करता है और एक आदमी अपने बाल बच्चों को या मां बाप को याद करता है, क्या अन्तर है दोनों में ? केवल अवस्था का ही तो अन्तर है। आगे क्या है ?

हैरत हैरत हैरत होई, हैरत रूप धरा इक सोई।

वह वर्णन से बाहर है किन्तु है सही। वह दशा केवल संकेतों से ही बताई जा सकती है। किसी वानी में वर्णन नहीं की जा सकती। जब आदमी मरने लगता है तो आखिर भूलेगा तो सही, हो सकता है कोई विचार आता हो यह तो पता नहीं लेकिन मैं जब अभ्यास में जब पूरी लगन से अपने आद घर की ओर आकर्षित होता हूं तो बाकी सब कुछ भूल जाता हूं किन्तु कभी कभी नहीं भी भूलता।

खीर खाड घृत पिण्ड संवारा, सो तन लै बाहर करि डारा
जेहि सिर रचि रचि बांधिसु पागा, सो सिर रतन बिडारै कागा

यह शरीर जिसको हम पालते हैं यह तो एक दिन टूट जाता है लेकिन जब मैं अभ्यास में जाता हूं तो सब कुछ भूल जाता हूं। अभी तक वह समय मुझ पर नहीं आया अभी तक तो सिर कायम है और मस्तिष्क कायम है। इस वास्ते मैं यह इच्छा करता रहता हूं कि ऐ मालिक ! तू मुझे शक्ति दे कि जब मैं शरीर से बाहर जाऊं और मेरी हस्ती यदि कायम रहे तो संसार को बता सकूं कि कहां गया। अभी तक तो मेरी जितनी रिसर्च (खोज) है यह सब काया में ही देख रहा हूं। काया के नाश होने के बाद कहां जाऊंगा या मेरा "है पना" रहेगा या नहीं। यह पता नहीं। अब तक तो जो कुछ मैंने कहा वह हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा अनुसार अपना अनुभव कहा। ठीक है या गलत हैं। यह मुझे पता नहीं। जिस शक्ति ने मेरा शरीर और मन बनाया है वही शक्ति मुझसे यह काम करवा रही है। मैं तो केवल घसीटा जा रहा हूं।

हाड़ जरै जस सुखी लकड़ी केस जरै जस तृन की कूरी
आवत संग न जात संघाती, कहा भए दल बांधे हाथी

बहुत सोचता हूं कि मैं कहाँ से इस शरीर में

आया था कैसे आया था, कैसे जाऊंगा। यह प्रश्न हर समय मेरे मस्तिष्क में रहता है और इसको हल करता हुआ आ रहा हूं। दूसरों को भी देखा और स्वयं भी अनुभव किया। इस समय तक यह समझ आया कि न मैं आया और न मैं गया। मेरे अन्तर जो "मैं" पैदा हुई, जो सोचती है और समझती है वह प्रकृति खेल के अनुसार प्रकाश के शरीर में आने से एक सनसनाहट पैदा हो जाती है जैसे टाटरी और सोडे को मिलाने से पैदा हो जाती है। इसलिए यह समझ आई कि यह शारीरिक मानसिक और आत्मिक शूं शूं है। ऋषियों की खोज ने शूं शूं को दशा को कायम रखा और जहां से यह शूं शूं पैदा होती है उसका नाम उन्होंने सतलोक या सतपद रखा। सन्तों ने इससे आगे खोज की। इनकी खोज में सतपद की शूं शूं भी समाप्त हो जाती है। सतपद से आगे संतों ने अलख और अगम कह दिया। हस्ती की जो अवस्थाएं हैं उनका नाम सत अलख और अगम है। ऋषियों ने और बाकी सब धर्मों ने हस्ती को कायम रखा केवल कबीर साहिब और राधास्वामी दयाल जी

महाराज ने वर्षों तप करने के बाद यह कहा कि हस्ती भी नहीं रहती। क्या रह जाता है ? हस्ती की जागृत अवस्था सत है हस्ती को स्वप्नावस्था अलख और सुषुप्ति अवस्था अगम है। पीछे क्या रह गया ? पता नही।

वह है है है, इसमें कोई शक नहीं।
लेकिन उसके कहने का कोई किसी कोहक नहीं।

उसको कोई परम तत्व कह देता है कोई अनामी कह देता है और कोई उसको जात कह देता है। इस मार्ग पर यात्रा करने से मुझे क्या मिला ? मिलना क्या था, जीवन बना और समाप्त हो गया। बुलबुला समुन्दर में पैदा हुआ, नाचा खेला और टूट कर फिर समुन्दर में मिल गया :--

जो था रूप पहले वही रूप मेरा, न व्यापा मुझे काल का हेरा फेरा
अलख हूं अगम हूं अनामी बना हूं, कहूं कैसे कैसा कहां और क्या हूं
गुरु राधास्वामी ने आ के चेताया, मेरा रूप मुझको सहज में लखाया

यह मेरी समझ में आया है। यह समझ नहीं आई कि मेरी हस्ती की शूं शूं अभी तक क्यों

ress कहा जाता है । पण्डित पुरुषोत्म दास को हजूर दाता दयाल जो महाराज ने एक जगह लिखा था कि संसार में Cash witness की तरह रहो। जो कुछ हो रहा है उसका दृश्य देखते रहो और उसमें फंसो नहीं।

I long for the day when I will go. प्रतीक्षा कर रहा हूं कि मेरे साथ क्या होगा। अभी तक तो जो कुछ मैंने देखा वह शरीर में ही रह के देखा। मैं सब कुछ सुनता हुआ वहरा बन के रहता हूं, सब कुछ देखता हुआ अन्धा बनके रहता हूं और गूंगा वन के रहता हूं किन्तु मैं बाहोश बहरा, बाहोश अन्धा ओर बाहोश गूंगा हूं। कौन समझेगा मेरी बात को ?

अब कहाँ चलें अकेले मीता, उठि क्यों करो न घर की चेता

अकेला कहां जाऊंगा ? जीवन एक बुलबुला है। न कोई आता है न कोई जाता है किन्तु यह ज्ञान उनके लिए है जिनको कोई पूर्ण गुरु मिल गया है और ज्ञान मिल गया है। सन्तों ने क्या ज्ञान दिया ? यह मुझे पता नहीं लेकिन जो ज्ञान मुझे मिला या जो कुछ मैंने अनुभव किया वह यह है

कायम है। जब इस पर विचार करता हूं तो सारा ज्ञान ध्यान ठप हो जाता हैं। अपने बस में कुछ नहीं यह सब मौज का खेल है जीव, जन्तु, सियारे, धरती, चांद और सूर्य बनते हैं और टूट जाते हैं उसकी लीला अद्भुत है।

आज सत्संग था। मरता कोई है और उसकी मौत का लाभ मैं उठाता हूं। मरने वालों का मैं आभारी हूं मुझे सोचने का समय मिलता है। रामचन्द, राए साहिब और संत कृपाल सिंह जी महाराज के चोला छोड़ने से मेरे मस्तिष्क को गति मिली। क्या परिणाम हुआ ?

Silence in the beginning and silence in the end और मध्य भाग जो है वह जीवन का प्राकट्य हैं।

पण्डित पुरुषोत्म दास बसरे बगदाद में रेलवे स्टेशन बगदाद में रेलवे विभाग में Cash witness थे। जब रेलवे का खज़ाना जाता है तो रेलवे वालों की ओर से एक व्यक्ति नियत किया जाता है जो यह देखता है कि कैश ठीक गिना गया है और मोहरे भी ठीक लगाई गई हैं। उस आदमी को Cash wit-

कि वह एक तत्व है कोई उसको अनामी पद कह देता है कोई उसको अकह अपार अगाध और अनाम कह देता है। उसमें गति हुई करोड़ों ही जीव बन गए, तुम्हारे शरीर में करोड़ों ही कीटाणु हैं लेकिन तुम को कोई पता नहीं। वही कीड़े तो तुम्हारा ब्रह्माण्ड हैं तुम्हारी हस्ती उन पर कायम है। यहां आ के आदमी चुप हो जाता है। जिसको समझ आ जाती है उसके लिए यह गूंगे का गुड़ है। लेकिन दुर्बल हृदय वाले व्यक्ति अपने आप कों नियन्त्रण में नहीं रख सकते।

सबको राधास्वामी

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महा-राज मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक १५ सितम्बर १९७४

मसाफिर जैहौ कीनी ओर
काया सहर कहर है न्यारा, दुई फाटक घनघोर।
काम क्रोध जहां मन है राजा, बसत पचीसो चोर॥
संशय नदी बहै जल धारा, विषय लहर उठै जोर।
अब का गाफिल सोवै बौरा, इहाँ नहीं कोई तोर॥
उत्तर दिसा इक पुरुष विदेही, उन पै करो निहोर।
दाया लागै तब लै जैहैं, तब पावो निज ठौर।
पाछल पैंडा समझो भाई, ह्वै रहो नाम कि ओर।
कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तौ पैहौ झकझोर॥

राधास्वामी ! यह एक महीना कुछ ऐसा ही गुजरा है। पहले मामचन्द गुजर गया, फिर सन्त कृपालसिंह जी चले गए और फिर मेरे छोटे भाई राए साहिब सुरेन्द्र नाथ जी पूरे हो गए। इसलिए प्रतिदिन शोक के शब्द पढ़े जाते है। मेरा हृदय सत्यप्रिय है। जीवन खोज में गुजरा है लेकि

मुझे कोई दावा नहीं कि इस खोज से मुझे जो अनुभव हुआ है यही ठीक है। हो सकता है मेरा अनुभव गलत हो।

मुसाफिर जैहौ कौनो ओर।

मुसाफिर कौन है? हम सबके अन्दर कोई वस्तु हैं जो कभी कुछ चाहती है और कभी कुछ चाहती है। कभी जागती है और कभी सोती हैं। वह है मुसाफिर। जब शरीर छूट जाता है तो वह वस्तु कहां जाती है? मैं दिन रात इसी खोज में रहता हूं मुझे तो यह समझ आई कि जिस जिस प्रकार के संस्कार मस्तिष्क पर पड़े हुए होते हैं और जिस तरह की आदमी की वासनाए होती हैं उन्ही के अनुसार उसको जाना चाहिए। हमको कभी धन की कामना है, कभी मान प्रतिष्ठा की इच्छा होती है और कभी स्त्री की इच्छा होती है। हमारी इच्छानुसार हमारा विचार जाता है। इसलिए जैसी आशा वैसी वासा के अनुसार ही हमको अपनी वासनाओं के अनुसार ही अगला जन्म मिलता है। इस वास्ते मरने वालों की आशाओं की पूर्ती और आशओं से छुड़ाने के लिए अंतिम

समय पर राम राम या गीता का पाठ या राधा-स्वामी मत की बानी या उसके विश्वास के अनुसार उसको पाठ सुनाया जाता है ताकि मरने वाले का विचार उसके इष्ट में लगे। मरने वाले के जीवन में जो वस्तुएं उसे पसन्द थीं वही नस्तुएं उसकी क्रिया कर्म में दी जाती हैं। जब कोई छोटा बच्चा मर जाता है तो उसकी माता अपने स्तन से दूध निकाल कर वहां पर डालती है जहां बच्चें को दबाया जाता है। यदि बच्चा बड़ा है तो उसके लिए खिलौने और मिठाई बच्चों में बांटी जाती हैं। युवास्त्री के मरने पर कपड़े और आभूषण दिए जाते हैं। जवान व्यक्ति के मरने पर राजपूत परिवारों में घोड़ा और जोड़ा दिया जाता था। तो कबीर साहिब कहते हैं कि मरने के बाद जीव कहां जाता है?

मुसाफिर जैहो कौनी ओर
काया सहर कहर है न्यारा, दुई फाटक बनघोर।

जब हम शरीर में आते हैं तो हमारे अन्तर वासनाएं पैदा हो जाती हैं और यदि शरीर न हो तो वासनाएं पैदा न हों। यह शरीर दुख का कारण है। यहां दो फाटक हैं। एक काम और एक

क्रोध । काम का अर्थ है वासना । स्त्री और पुरुष का मेल वासना का स्थूल रूप है ।

काम काम सब कोई कहे' काम न चीने कोये ।
जेती मन की कल्पना काम कहावे सोये ।

हमारे मन की कल्पनाएं और वासनाएं हमारे मन के फाटक हैं । जब कामनाएं पूरी नहीं होती तो हम दुखी हो जाते हैं । लोभ और मोह भी काम में आते हैं । यह सब हमारी वासनाएं हैं इनकी पूर्ती न होने की दशा में हमको क्रोध आता है और क्रोध आने से घृणा और द्वेष पैदा होते हैं ।

अब मैं सोचता हूं कि फकीर ! एक दिन मर जाना है तुम किस नियम से अपने आपको सन्त सत्गुरु कहते हो ? गुरु नाम है अन्धकार को दूर करने का । गुरु वह है जो सच्चाई वर्णन करे । क्योंकि मैं गुरु आज्ञावस या अपने कर्म भोगवस सच्चाई वर्णन करता हूं इसलिए मैं अपने आप को सतगुरु कहता हूं । सच्चाई का ज्ञान मुझे कैसे हुआ ? दया तो मेरे गुरु हजूर दाता दयाल जी महाराज की है लेकिन जब से मैंने आप लोगों के चरणों की मिट्टी सिर पर रखी और आप लोगों से मुझे यह पता

लगा कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर पैदा हो कर अनेक प्रकार के आपके काम कर जाता है और मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता होता है तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अंतर भी जो संकल्प विचार आशाएं और वासनाएं पैदा होती हैं यह सब मेरी ही कल्पनाएं हैं और हम इनमें आप ही फंस जाते हैं ।

यह कल से एक स्त्री सरसा (हिसार) से आई हुई है । इसने बताया कि कुछ वर्ष पहले इसको ओप्रेशन करवाना पड़ा और यह ओप्रेशन से बहुत डरती थी । आपका रूप अन्तर में प्रकट हुआ और कहा कि चिन्ता मत करो । जब ओप्रेशन हुआ तो आप दो घण्टे मेरे पास रहे लेकिन मैं सच कहता हूं कि मैं नहीं गया और न ही मुझे कोई पता है तो इससे सिद्ध हुआ कि जीव मन के चक्कर में आए हुए हैं ।

कल व्यास जी ने एक घटना सुनाई कि उसको रात में एक स्वप्न आया । स्वप्न में उसने देखा कि सन्त कृपालसिंह जी ने लंगोटी लगाई हुई है, वभूती मली हुई है, हाथ में कमण्डल है और साधु बने हुए

हैं। उन्होंने कहा कि मैंने काम तो बहुत किया किन्तु मैं फंसा हुआ था। अब मैं इस जीवन में सुखी हूं और फिर उन्होंने मेरी कोई नाड़ी दबाई तो मेरे अन्तर प्रकाश हो गया।

सुनो ! जब यह व्यास उज्जैन में था तो इसके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता था और इसके सारे काम कर जाता था लेकिन मैं तो नहीं था और न मुझे कोई पता होता था। वह सब क्या था ? इसके अपने ही मन का सारा खेल था। इसलिए मैं कैसे मानूं कि सन्त कृपाल सिंह जी चोला छोड़ने के बाद इसके अन्तर आए जबकि मैं जीवित बैठा किसी के अन्तर नहीं जाता। यह सब इन्सान के अपने ही विचार का फल है। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता।

आप लोग मेरे सत्संग में आते हैं मैं डंके की चोट कहता हूं कि मैं समय का सन्त सतगुरु हूं। इस समय जिस सच्चै ज्ञान, सच्चे भेद और सच्ची शिक्षा की आवश्यकता है वह संसार को बता रहा रहा हूं लेकिन मेरी बान को समझेगा कौन ? हजूर दाता दयाल जी महाराज कहा करते थे कि सन्तमत

को समझने वाला संसार अभी पैदा नहीं हुआ। सन्तों ने इस शिक्षा का बीज डाल दिया है किसी समय अंकुर फूटेगा। हो सकता है जीवन में तुम इस शिक्षा को समझ जाओ।

काया सहर कहर है न्यारा, दुई फाटक घनघोर।
क म क्रोध जहं मन है राजा, डसत पचीसो चोर।

हमारी वृत्तियां सब घोर हैं। कैसे ? चोर क्या करता है ? चोरी करता है और सामान उठा लेता है। धन सम्पति ले जाता है इससे हमारे काम में बाधा पड़ जाती है ऐसे ही हमारे अन्तर जो वस्तु मुसाफिर है उसमें यह वृत्तियां बाधा पैदा कर देती है। कभी मोह का विचार आ गया, कभी क्रोध का विचार आ गया, कभी काम का विचार आ गया और कभी कोई विचार आ गया। यह विचार हमारी उस वस्तु को जो सफर करती है वश में कर लेते हैं। जब तक कोई आदमी शारीरिक मानसिक और आत्मिक बोधभानों को नहीं छोड़ेगा, वह इस सफर करने वाली वस्तु को समझ नहीं सकता। उस सफर करने वाली वस्तु को सन्त सुरत कहते है और सुरत हें तुम्हारा अपना आप।

लाख कोई भाषण देता रहे और आत्मा आत्मा चिल्लाता रहे। बोद्धिक रूप से जो इच्छा हो कहता रहे लेकिन जब तक वह अपने अन्तर में साधन करके तन मन और प्रकाश को भूल कर इनसे अलग नहीं होगा तब तक वह अपने आप का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता, चाहे कोई सार बचन पढ़ता रहे या गीता का पाठ करता रहे या कबीर साहब की बानी पढ़ता रहे या किसी और ग्रन्थ का पाठ करता रहे। इसलिए सन्तों ने अपने रूप का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नाम दान या सुमरिन ध्यान और भजन का सिलसिला आरम्भ किया है किन्तु यदि किसी को पूरा गुरु नहीं मिला तो वह निसन्देह लाख अभ्यास करता रहे उसको अपने रूप का ज्ञान नहीं होगा। मेरे अन्तर क्योंकि सच्चाई की खोज थी और तड़फ थी इसलिए वह खोज और तड़फ मुझे हजूर दाता दयाल जी के चरण कमलों में ले गई। उन्होंने मुझे नाम दान दिया और मैंने बहुत नाम जपी, बड़े बड़े शब्द सुने, बातें सुनीं, बहुत आनन्द लिए सिद्धि शक्ति

भी आ गई लेकिन इतना कुछ होने के बाद क्या मैं फिर कामी नहीं हुआ ? क्या मुझे क्रोध नहीं आता था ? आता था। इसलिए साधन अभ्यास भी बिना पुर्ण गुरु के तुमको अंतिम अवस्था तक नहीं ले जा सकता। ऐसे अभ्यासो के अन्तर खुशी आनन्द और सिद्धि शक्ति का अहंकार आ जाता है इसलिए इस सच्चाई और सार भेद को प्रकट करने के लिए प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया। सच्चाई क्या है ? कि ऐ इन्सान ! जब तक तुमको कोई पूर्ण पुरुष नहीं मिलता तुम अधूरे रहोगे। इसलिए सन्तों के मार्ग में साधन अनिवार्य है मगर साथ हो किसी पूरे गुरु का सत्संग भी अति आवश्यक है।

जहां सबज बाग दिखाया जाता है, रोचक और भयानक बातें बताई जाती हैं वहां अधिक लोग आकर्षित होते हैं। सच्चाई को सुनने के लिए संसार त्यार नहीं है। क्योंकि मैं सच्चाई वर्णन करता हूं इसलिए यहां बहुत कम लोग आते हैं। परन्तु मेरा ध्यान इस ओर नहीं जाता कि यहां लोग कम आते हैं या ज्यादा आते हैं। मैं तो आया ही इसलिए

हूं कि जो जीव इस काया में फंसे हुए हैं यदि वह निकलना चाहें तो उनको ठीक मार्ग बता जाऊं। मेरी शिक्षा उनके लिए है जो इस संसार में रहते हुए यह अनुभव करते हैं कि यहां सुख नहीं। यहां कौन ऐसा है जिसको शारीरिक कष्ट नहीं होता, जिसकी निन्दा नहीं होती या जिसकी मौत नहीं आती। यह तो संसार ही ऐसा है। सन्तों की शिक्षा उसके लिए है जो इस चक्कर से निकलना चाहते हैं। साधारण संसार के लिए तो शिव संकल्प मस्तु है। किसी निर्धन की सहायता करो परोपकार करो, भूके को रोटी दो और किसी बीमार को दवाई दो। सन्तों की शिक्षा का हरएक आदमी अधिकारी नहीं है।

काम क्रोध जहं मन है राजा, वसत पचीसो चोर।
संसय नदी वहै जल धारा, विषय लहर उठै ज़ोर।

कबीर साहब कहते हैं कि यह संसार ही ऐसा है। आदमी के मन के अन्तर भ्रम की नदी बहती है। यह स्त्री जो यह कहती है कि बाबा जी ! आप का रूप मेरे अंतर प्रकट हुआ और मेरे औप्रेशन के के समय आप मेरे साथ रहे, मैं तो था नहीं, तो फिर

इसके अन्तर यह एक भ्रम ही तो है कि बाबा जी आए और या यह कर गए या वह कर गए। इस भ्रम के कारण यह मुझे पूजती है। आज इसके लड़के ने भी रुपए दिए। तभी तो मैं कहता हूं कि इस यग में हम महात्माओं ने संसार को सच्ची बात न बताकर उनको मूर्ख बनाया है और लूटा है। पैसा तो मुझे भी चाहिए, बिना पैसे के तो यहां भी निर्वाह नहीं है, किन्तु मैं परदा रख कर या किसी को धोखा दे कर या लोगों की आंखों में धूल डाल कर किसी से पैसा नहीं लेना चाहता, ज्ञान की दृष्टि से या परोपकार की दृष्टि से दो या निष्काम भाव से दो। अज्ञान में देने से तुम्हें तो लाभ हो जाएगा लेकिन मैं मारा जाऊंगा। कर्म का नियम यदि ठीक है तो जिन महात्माओं ने संसार को अज्ञान में रख कर रुपया एकत्र किया, अपनी मोटरें मोल लीं, अपनी सम्पत्तिएं बनाईं और अपनी सन्तान को पाला और उनको धन सम्पत्ति दे गए उनका क्या परिणाम हुआ होगा यह मुझे पता नहीं किन्तु छल और कपट करने वाले के लिए दण्ड का कोई नियम है तो सतलोक तो कहां वह कहीं नर्क

में पड़े हुए होंगे । वह तुमको सतलोक कैसे पहुंचा-एगा । इसलिए मैं सच्चाई वर्णन करता हूं। कौन देता है और कौन लेता है जिस भाव से कोई देता है उसी का उसका फल मिलता है ।

अब का गाफिल सोवै बौरा. इहां नहीं कोई तोर ।

ऐ भूले हुए मानव ! तू क्यों सो रहा है ? यहां तेरा कोई नहीं है तुमने अज्ञान में आकर यह माना हुआ है कि मेरा बच्चा है, यह मेरी मां है, यह वहन है, यह भाई है, यह स्त्री है और यह बाप हैं । तुमने स्वयं ही इनको माना हुआ है और स्वयं ही फंसे हुए हैं। राए साहिब सुरेन्द्र नाथ मेरा भाई था अब वह मर गया । मैं सोचता हूं कि कहां गई उसकी राए साहबी और कहां गई उसकी योग्यता और कहां गया वह आप ? कल को मैं मर जाऊंगा । कहां जाएगी मेरी गुराई और कहां ले जाऊंगा मैं इस संसार से ? संत कृपालसिंह जी चोला छोड़ गए, विश्वधर्म संमेलन कराया करते थे, संसार में नाम था, मानव आश्रम और रुहानी सतसंग बना गए, क्या ले गए इस संसार से ? हम लोग सारा जीवन जाग्रत में तो क्या स्वप्न में भी

फंसे रहते हैं और कोई यह नहीं सोचता कि हमने एक दिन यहां से चले जाना है। मुझे प्रशन्नता है कि मैंने अपने अन्तःकरण का हनन नहीं किया। बचपन में जों भूल की वह तो की लेकिन और कोई मैंने बुराई नहीं की।

उत्तर दिशा इक पुरुष बिदेही उनपै करो निहोर।

कबीर साहिब कहते हैं उतर दिशा अर्थात् ऊपर की ओर विदेह पुरुष रहता है। उसकी ओर ध्यान दो (यदि आप चित्र की ओर मुंह करके खड़े हो जाएंगे तो आपकी दाईं ओर पूर्व, बाईं ओर पश्चिम, चित्र की ऊपर की ओर उत्तर और नीचे की ओर दक्षिण होता है) उसी से सारी रचना होती है। विदेही पुरुष वह होता है जिसकी देह नहीं है। तो फिर वह कौन है ? लोग कहते हैं कि अन्त समय पर उनका गुरु बावा फकीर या हजूर सावनसिंह जी या हजूर दाता दयाल जी महाराज या स्वामी महेश्वरानन्द जी या राम या कृष्ण आ के उनको ले जाएंगे। सोचो तो सही यह तो सब देहधारी हैं, यह पुरुष विदेही कैसे हुए ? जो यह कहते हैं कि नाम ले लो, अन्त समय पर तुमको गुरु आ के ले जाएगा और

चक्कर से बचा देगा, वह सब नादान और अज्ञानी हैं। मैं सच्चाई वर्णन करने के लिए इस संसार में आया हुआ हूं और आशा करता हूं कि मेरे मिलने वाले इस सच्चाई को फैलाने के लिए मेरी सहायता करेंगे। मैं यह क्यों कहता हूं ? लोग मरते समय कहते हैं कि बाबा फकीर आया, घोड़ा ले आया या कार ले आया या पालकी ले आया लेकिन मैं नहीं होता और न मुझे कोई पता है इसलिए मैं हूं समय का सन्त सतगुरु यह आवाज देना चाहता हूं कि ऐ संसार के गुरुओं और महात्माओं ! तुम लोगों ने रोचक और भयानक बातें कह कर लोगों को अपने पोछे लगाया, उनको लूटा और अपनी गद्दियां और डेरे बनाए और अपनी सम्पत्तिएं बनाईं। तुम जाओगे कहां ? अपने आप से पूछो कि क्या तुम किसी के अन्त समय पर उसको लेने जाते हो ? मेरे सामने यह सभी सन्त मानते है कि हम किसी को लेने नहीं जाते और न हमको किसी की मृत्यु का ज्ञान होता है लेकिन यह लोग पब्लिक प्लेटफार्म पर नहीं रहते क्योंकि इनकी गद्दियों को धक्का पहुंचता है और रुपया भी नहीं आता। मैं इस

संसार में सच्चाई का अवतार ले कर प्रकट हुआ हूं

I am the incornation of truth in this world

किन्तु उनके लिए जो सच्चाई के इच्छुक हैं और इस चक्कर से निकलना चाहते हैं। दूसरों के लिए है 'शिवसंकल्पमस्तु'। अच्छे विचार रखो, सबका भला चाहो और किसी दुखिए की सहायता करो। यदि यदि संसार में सुखी रहना चाहते हो तो अपनी नियत को साफ रखो। आजकल यह लोग जो मिलावट करके धन कमाते हैं, बड़ी बड़ी इमारतें बनाते हैं, मोटरें मोल लेते हैं और सम्पत्तिएं बनाते हैं यह जाएंगे कहां ? क्या कर्म का फल इनको छोड़ देगा ? कदापि नहीं।

मिलावट करने में हम महात्मा लोग भी किसी से कम नहीं हैं। ऐ महात्माओं ! जब तुम्हारा रूप किसी के अन्तर प्रकट होता है तो तुम तो जाते नहीं यह तो जीव का अपना ही विश्वास होता है फिर क्यों तुम लोगों ने परदा रख कर संसार को अपने पीछे लगाया है और उनसे धन और मान लिया है; क्या तुमने मरना नहीं है ? कर्म से बच कर कहां जाओगे

मैंने आपको सिद्ध कर दिया कि जिसको अन्त समय पर कोई रूप, चाहे वह हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज का है, चाहे फकीर का है, चाहे और किसी गुरु का है, चाहे राम का है, चाहे कृष्ण का है, देवी देवते का है और चाहे नरंकारी साहब का या शिव जी का है, वह आवागमन से नहीं निकल सकता, उसको दूसरा चोला अवश्य मिलेगा क्योंकि वह जो रूप अन्तर में प्रकट हुआ है वह पुरुष विदेही नहीं है। हजूर दाता दयाल जी महाराज को आज्ञा थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। जो मेरी समझ में आया उसके आधार पर बदल चला किन्तु मुझे किसी बात का दावा नहीं। रोशनी तुम्हारे अन्तर आ गई उसका भी रूप है गुरु तुम्हारे अन्तर आ गया उसका भी रूप है उसकी भी शकल है। विदेह केवल शब्द है शब्द से ही सारी रचना होती है। सनातन धर्म के अनुसार और सन्तों के अनुसार शब्द ही सबका आधार है। पुरुष विदेही मैं रचना की शक्ति होती है और पुरुष में पुरुषार्थ होता है। संसार से तुमको यदि कोई निकाल सकता है तो शब्द निकाल सकता है।

उसका नाम अनहद राग अथवा उद्गीत है। उसी को प्रण्व कहते हैं। वह नाम कहां है ? उत्तर दिशा अर्थात् ऊपर की ओर, उस नाम का सहारा पकड़ो। इस वास्ते सच्चा सतगुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल है और उनके चरण प्रकाश है इस संसार से पार जाने के लिए क्या उपाय है? अपने अन्तर प्रकाश में जाओ। सनातन धर्म के अनुसार सावित्री के दर्शन करो। गरुड़ पुराण में लिखा है कि आवागमन से पार वह जा सकता है जो गायत्री मन्त्र का अजपा जाप और गुरु स्वरूप का ध्यान करता हुआ प्रकाश और शब्द अर्थात् पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म में जाएगा। सनातन धर्म और सन्तमत की शिक्षा में अन्तर क्या है। क्योंकि मन चंचल है, इसमें आशाएं और वासनाएं हैं, इस वास्ते नाम का पकड़ना कठिन है। मन को स्वच्छ और सूक्ष्म बनाने के लिए सबसे पहले वैराग होना चाहिए। और संसार से उदासीनता होनी चाहिए और यह सब को सत्संग से मिलेगा।

अब तुम देखो कि मामचन्द मर गया और मेरा भाई मर गया। यह भी मेरे लिए सत्संग

सिद्ध हुए । क्यों ? क्योंकि मुझे इनकी मौत से यह ज्ञान मिला कि मैंने भी एक दिन मरना है । हमारे सामने लोग मरते हैं, अर्थी उठा के ले जाते हैं, शव को जला कर जब घर वापस आते हैं तो फिर वही घरेलु झगड़े । इसलिए यह मार्ग उनके लिए है जिनको संसार में दुख है, कष्ट है और जो संसार में दुखी हैं । वह धन्य हैं :—

दुख दारू सुख रोग भया

स्वामी जी महाराज ने लिखा है :—

काल रचा हम समझ सके ।

यदि हमको दुख न आए तो हमको वैराग पैदा ही नहीं हो सकता । दुख में सोचने का समय मिलता है । मेरी माता जी मरी, पिता जी मरे और बच्चे भी मरे अब भाई मर गया और हमने भी एक दिन मरना है । यह शोक के गीत, या शब्द इसलिए पढ़े जाते हैं कि संसारियों को वैराग आए और आवागमन से निकलने का विचार पैदा हो, जब तक आदमी के मन में दृढ़ बैराग न हो, वह विदेही पुरुष को पकड़ नहीं सकता । आपके सामने महात्मा दयालदास का उदाहरण विद्यमान है । इसकी स्त्री मर गई और भाईयों ने तंग किया, यह दुखी हुआ

तब मन में वैराग्य पैदा हो गया और शब्द खुल गया। क्या मैंने खोला ? यदि सतसंग से किसी को वैराग हो जाए तो बहुत ही अच्छा है लेकिन आजकल सत्संगों में कोई ऐसी शिक्षा देता नहीं है।

कल देहली से सन्त कृपालसिंह जी महाराज के एक सेवक की चिठ्ठी आई, वह लिखता है कि यहाँ सन्त कृपालसिंह जी महाराज के भोग के समय पर आपने जो श्रद्धांजली भेजी है, पर पीर मुगां जी महाराज ने पढ़कर सुनाई। संगत ने उसको बहुत पसन्द किया। उसने मेरी बहुत प्रशंसा की है। वह लिखता है कि यदि आपने हजूर सावनसिंह जी महाराज या सँत कृपालसिंह के बारे कोई पुस्तक लिखी हो तो वह मुझे अवश्य भेज दें और यदि न हो तो अपनी पुस्तक मुझे भेज देवें ताकि मैं सारतत्व को समझने का यत्न करूं। संसार गुरु से ही चिपके रहता है। गुरु से चिपकने से या गुरु की प्रशंसा करने से तुम अपने आद घर नहीं पहुंच सकते। गुरु की बानी को पकड़ो।

वानी गुरु गुरु है वानी वानी अमृत सारे।

गुरु जो कहता है उसको तो कोई समझता

नहीं और न ही उस पर अमल करता है केवल गुरु का ढिण्डोरा पीटते हैं। हां ! गुरु के प्रेम से मन स्वच्छ होता है। यह न समझना कि मैं इसको बुरा समझता हूं। यह पहली सीढ़ी है लेकिन लोग यहां ही फंसे रहते हैं, आगे जाने का यत्न नहीं करते। एक बच्चा यदि मास्टर को मथ्था ही टेकता रहेगा और पढ़ेगा नहीं तो क्या वह ज्ञान प्राप्त कर लेगा ? ज्ञान तो उसको तब आएगा जब वह मास्टर के पढ़ाए हुए को याद करेगा ऐसे ही अज्ञानी लोग गुरु की प्रशंशा ही करते रहते हैं उसके ज्ञान को कोई नहीं समझता।

उत्तर दिसा इक पुरुष विदेही, उनपै करो निहोर।
दाया लागै तब लै जैहै, तब पावो निज ठौर।

यह भी उस मालिक को ही दया है। मैं तो इस परिणाम पर आया कि आदमी के वस में कुछ नहीं। अनुभव बताता है कि :---

जिस पर दया आद करता की सो यह नहमत पाए

जिसका समय आ जाता है वह इस वस्तु को प्राप्त कर सकता है। इसलिए सत्संग किसी पूर्ण पुरुष का करते रहो, कोई न कोई मन को ठेस लगती रहेगी। इस से हो सकता है किसी समय

तुम्हारा जीवन बदल जाए।

पाछल पैंडा समझो भाई, ह्वे रहो नाम की ओर
कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तो पैहो झकझोर।

अपने आपको नाम की ओर लगाओ वह नाम हर समय तुम्हारे अन्तर में गूंजता रहता है किन्तु जो व्यक्ति संसार में त्याग कर सकता है और जिसके मन को बाहर में ठहरने का अभ्यास नहीं होता वह इस ओर आ ही नहीं सकता, इसलिए पहले बाहर में ईश्क मजाजी करो अर्थात् प्रकृति की किसी वस्तु से प्रेम करो और उसमें अपने मन को ठहराओ, कोई आदमी फूलों से प्यार करता है, कोई मां से प्रेम करता है, कोई बाप से प्रेम करता है, किसी को स्त्री से या बच्चों से प्रेम है यह सब इश्के मजाजी है। जब मन को बाहर में प्रेम करने का अभ्यास हो जाएगा तब वह जब अपने अन्तर में प्रवेश करेगा तो पुरुष विदेही से प्रेम कर सकेगा। इस वास्ते संगत में पहले बाहर की सेवा दी जाती है और प्रेम मार्ग में लगाया जाता है। सच्चे प्रेम से अन्तर की आंख खुलती है। आपने बाबा फरीद की बात सुनी होगी। बारह वर्ष तप करने के बाद

एक पेड़ के नीचे बैठ गए। वृक्ष पर चिड़िएं बोल रही थीं। बाबा फरीद को यह शोर अच्छा न लगा तो कहने लगे कि मर जाओ। चिड़िएं मर गईं और धरती पर गिर पड़ीं। वह देख कर चकित हो गए फिर कहने लगे कि चिड़ियों ! उड़ जाओ। वह सब जीवित हो गईं और उड़ नईं। वह देख कर वह बहुत प्रसन्न हुए। उनके मन में यह भाव आ गया कि अब मैं कुछ बन गया हूं। चलते २ एक गांव में से गुजरे। दोपहर का समय था। गर्मी का मौसम था। प्यास लगी हुई थी। एक कुएं पर एक युवा स्त्री पानी खींच रही थी। उसके पास जा के कहने लगे कि मुझे पानी पिलाओ। पानी खींचने में तनिक देर लग गई तो उनको क्रोध आया। कुछ बोलने ही वाले थे कि वह स्त्री झट बोल उठी कि मुझे चिड़िया मत समझना कि मर जाओ और उड़ जाओ। यह सुनते ही बाबा फरीद के पांव से मिट्टी निकल गई और चकित हो गए और कहने लगे कि तुमको यह शक्ति कहां से मिली ? वह कहने लगी कि तुमने तो बारह साल गुजार दिए लेकिन मैंने अपने पति की सेवा से एक रात में

पाया है ।

उसकी सेवा क्या थी ? जब वह पहले पहल आई तो रात को उसका पति चारपाई पर लेटा हुआ था । उसने पानी मांगा स्त्री जब पानी लेकर वापस आई तो पति को नींद आ गई । उसने उसे जगाया नहीं । चारपाई के पास खड़ी हो गई । पानी का कटोरा हाथ में था और बड़े प्रेम से पति के मुख की ओर देखती रही कि कब जागे और इसको पानी पिलाऊं । यह जो कुछ समय इसी अवस्था में रही वह उसकी ध्यान अवस्था थी, उससे उसको ज्ञान हो गया । यह है भेद ।

देखो ! जो किसी की सेवा करता है उसको सेवा का फल अवश्य मिलेगा । मेरे छोटे भाई राए साहिब की एक स्थान पर सगाई हुई उसके ससुराल में एक ज्योतिषी था उसने राए साहिब का टेवा देखा, उसने बताया कि इसके सन्तान नहीं होगी, यदि हुई तो पेट में मर जाएगो, यदि पैदा हो गई तो आठ वर्ष की आयु तक मर जाएगी । उन्होंने लड़की का विवाह इसके साथ करने से इनकार कर

दिया। मेरे पिताजी ने मुझे पत्र लिखा कि सुरेन्द्र नाथ के ससुराल ने रिस्ता से जबाब दे दिया और अब मैं उन पर दावा करूंगा। मैंने पिताजी को इन्कार कर दिया कि आप केस न करें। सुरेन्द्र नाथ के ससुराल वालों का एक युवा लड़का प्लेग से मर गया। लोगों ने कहा कि तुम लोगों ने लड़की के रिश्ते का जो उनको जवाब दे दिया है, यह तुमने पाप किया किया है इसका तुमको यह फल मिला है और तुम्हारा लड़का मर गया है। वह डर गए। और दोबारा रिस्ता कर दिया और विवाह हो गया। मेरे छोटे भाई की स्त्री पतिव्रता थी और बहुत भोली थी। उसको हर दस दिन बाद माह आती थी। इसलिए सन्तान का प्रश्न ही पैदा नहीं होता था सुरेन्द्र नाथ कहा करता था कि एक लड़की मुझे दे दो मैं उसे अपनी लड़की बना के उसको पालूंगा। क्योंकि वह रिश्ता में मुझसे छोटी थी इसलिए वह मुझसे परदा करती थी और मेरे सामने वह बोलती नहीं थी। इनके क्वाटर के पास मैं और पुरुषोत्म दास Dug house में रहते थे। वह प्रतिदिन रात को हम दोनों के लिए दूध के दो

गिलास ले कर आती थी । एक रात जब वह दूध ले कर आई तो हम दोनों सोए हुए थे वह बिचारी दूध ले कर खड़ो रहो । प्रयाप्त समय गुजर गया । पुरुषोत्म दास को जाग आई । इसने लाजवन्ती (मेरे भाई की स्त्री का नाम था) को देखा । अन्धेरा था । इसने समझा कोई चोर है, इसने चोर चोर करके शोर मचा दिया । मैं भी उठा, लाजवन्ती मेरे सामने बोलती तो न थी यह खांसी और मैंने जान लिया कि यह लाजवन्ती है । दिल में विचार आया कि इसने हमारी बहुत सेवा की है और वह भी निष्काम । विचारी कब से दूध ले कर खड़ी है । मैंने उठकर कहा कि बेटी ! जितनी संतान चाहोगी, उतनी हो जाएगी । यह छः बच्चे लाजवन्ती के कर्म का फल हैं । क्योंकि वह पतिव्रता स्त्री थी और मेरी भी बहुत मान प्रतिष्ठा करती थी इसलिए उसने सुरेन्द्र नाथ को कई बार कहा कि मैं उनसे नाम लूंगी लेकिन सुरेन्द्र नाथ ने कहा कि वह तो तेरे जेठ हैं उनसे नाम लोगी तो उनसे बोलना पड़ेगा और पारिवारिक रीति के अनुसार यह अनुचित बात है । जब लाजवन्ती का अन्तिम समय आया तो उसका

सिर मेरी स्त्री की गोद में था। वह बहुत प्रसन्न ज्ञात होती थी। मेरी स्त्री से कहने लगी कि भाभी जी ! ऊपर ज्योति जल रही है और आरती हो रही है। उसके पश्चात वह पांच मिन्ट तक नहीं बोली और उसका शरीर शान्त हो गया। मैं प्रसन्न हूं कि उसका परिणाम बहुत अच्छा हुआ। अब आप सोचो कि क्या उसने किसी से नाम लिया हुआ था ? यह सब उसके मन की पवित्रता का खेल है। उसके चार लड़के हैं जो अच्छे २ पदों पर हैं। दो लड़किएं हैं उनके पति भी उच्च अधिकारी हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि तुम्हारा निष्काम कर्म और निष्काम सेवा तुमको आगे ले जाएंगे। लाजवन्ती हमारी निष्काम सेवा करती थी क्योंकि उस समय उसके कोई बच्चा नहीं था इसलिए वह संतान चाहती थी। मैं यह नहीं कहता कि तुम मेरी सेवा करो किंतु जिसकी सेवा करो निष्काम हो के करो। गुरु की भी निष्काम सेवा करो। स्वार्थ के लिए तो सारा संसार सेवा करता है निष्काम सेवा से फल मिलता है। यदि मन में कोई कामना है तो वह भी पूरी हो जाती है। किसी दुखिए की निष्काम सेवा करो। सत्संग

करो । सत्संग में क्या होता है ? दुखियों की सहायता की जाती है। माता पिता की निष्काम सेवा करो किन्तु आजकल तो माता पिता की सेवा सम्पत्ति के लोभ वश करते हैं । मैंने अपने पिता जी की निष्काम सेवा की है। पति की सेवा तो सब स्त्रिएं करती हैं क्योंकि पति कमा कर लाता है और उनको देता है और उनके काम की पूर्ती करता है यह सेवा नहीं यह तो एक व्यवहार है ।

सुनने में आया है कि जहां अमृतसर में हर मन्दिर साहब का तालाब (सरोवर) है वहां पहले एक छोटा सा कुण्ड होता था । एक स्त्री अपने पति को जिसको कि कोहड़ की बीमारी थी, टोकरी में में उठा के फिरा करती थी, भीख मांग कर उसका पालन पोषण किया करती थी । एक दिन वह उसकी टोकरी कुण्ड के किनारे रखकर स्वयं भीख मांगने चली गई । बाद में उस कोहड़ी ने देखा कि एक बच्चा आया और उस कुण्ड में नहाया तो कत्वा सफेद हो गया । कोहड़ी के दिल में विचार आया कि यदि मैं भी इसमें नहा लूं तो मैं स्वस्थ हो जाऊंगा। वह भी रींगते २ पानी तक पहुंच गया और नहाया । वह बिलकुल स्वस्थ हो गया और उठकर बाहर आ

गया उसका हृदय बहुत प्रसन्न था। इतने में वह स्त्री आ गई। जब उसने देखा कि उसका कोहड़ी पति वहां नहीं है और टोकरी खाली पड़ी है तो वह रोने लगी कि मेरा पति कहां है। उस व्यक्ति ने कहा कि मैं तेरा पति हूं। थोड़ी देर पहले तक मैं कोहड़ी था इस कुण्ड में नहाने से मैं स्वस्थ हो गया हूं। उसने सारा समाचार सुनाया किन्तु उस स्त्री को विश्वास न आया। वह कहने लगी कि तुमने मेरे पति को ही गुम कर दिया है और तुम मुझको ले जाना चाहते हो। अन्त में जब उसको निश्चय हो गया तो फिर वह स्त्री भी बहुत प्रसन्न हुई। यह है निष्काम सेवा का फल। इसलिए अमृतसर को बनाने वाली एक पतिव्रता स्त्री थी। अब लाखों व्यक्ति अपनी मुक्ति के लिए वहां जाते हैं।

जहां तक हो सके अपनी नियत को स्वच्छ रखो। निष्काम सेवा करो। ज्यादा विषय मत कमाओ। सन्तान को सन्तान के विचार से उत्पन्न करो, किसी अच्छे पुरुष का सत्संग करो। जब समझ आ जाए और मन वस में आने लग जाए तो साधन

करना आरम्भ करो ताकि जब शरीर छूटे तो तुम मन के चक्कर से निकल जाओ। यदि ऐसा नहीं करते तो तुम्हारी सुरत कभी उधर भटका खाती रहेगी और उसको शांति नहीं मिलेगी। आज बहुत कुछ कह दिया यह मेरा कर्म भोग है। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने बदल दी। ठीक है या गलत है इसका मुझे पता नहीं। सच्चाई की खोज में जो कुछ मैंने स्वयं अनुभव किया वह कहा। यदि ठीक है तो मुझे खुशी नहीं और यदि गलत है तो मुझे इसका शोक तहीं। मैं तो मालिक को मिलने निकला था। यह सन्तमत तो बीच में आ गई। मैं पहले भी विदेह को मानता था किन्तु विदेह के रूप का मुझे पता नहीं था। अब पता लग गया। अब भी उसको ही मानता हूं।

सबको राधास्वामी

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महाराज

मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक १६ सितम्बर ९९७४

(यह सत्संग राए साहिब की श्रद्धांजली में सम्मिलित होगा)

हंसा सुधि कर अपनो देसा ॥

इहां आई तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फंसे परदेसा ।
अबहूं चेतु हेतु करु पिउ से. सतगुरु के उपदेसा ।
कौन देस से आए हंसा, कबहूं न कीन्ह अन्देसा ॥
जाई परयो तुम मोह फन्द में, काल गह्यो तेरो केसा ।
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जो को रटत महेसा ॥
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा ॥
का कहि आयो कहा करतु हो, कहं भूले परदेसा ॥
कहै कबीर वहां चल हंसा, जनम न होय हमेसा ॥

राधास्वामी । मेरा सारा जीवन इस खोज में व्यतीत हुआ कि मैं कौन हूं कहां से आया हूं और कहां जाऊंगा । इस खोज के सिलसिले में मौज मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में

ले गई। उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी और कहा कि तुम सन्त बनो। बहुत अच्छा। अब यह शब्द सुना। दिल में विचार आता है कि लोगों को तो उपदेश करते हो, गुरु बने हुए हो, पहले तुम यह बताओ कि क्या तुमको अपने देश का पता मिला ? मैं अपने जीवन में सच्चाई से चला हूं और प्रण किया था कि इस रास्ते पर चलने से जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊंगा।

हंसा सुधि कर अपनो देसा।
इहां आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फंसे परदेसा॥
अबहूं चेतु हेतु करु पिया से, सतगुरु के उपदेसा॥

क्या सचमुच यह परदेश है ? हां। हम १८ रेलवे मण्डी को या मानवता मन्दिर को या होशियारपुर को या पंजाब को और या भारतवर्ष को अपना देश अथवा घर समझते हैं। अब मेरा मित्र मामचन्द मर गया, सन्त कृपालसिंह जी रुहानी सत्संग और मानव केन्द्र छोड़ कर चले गए और मेरा भाई राए साहिब सब कुछ छोड़ कर चला गया यदि वह इनका घर होता तो यह छोड़ कर क्यों जाते। इससे मुझे विश्वास हो गया कि

यहां हमारा घर नहीं है। हम मुसाफिर हैं। मैंने यह सुना हुआ था कि देवलोक होता है, मित्र लोक होता है, चन्द्रलोक होता है और वहां रूहें बसती हैं, वह भी देखे। जो कुछ हम अपने अन्तर में दृश्य देखते हैं या रात को स्वप्न देखते हैं यदि यह असल में कुछ होते तो सदा रहते। बस केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और जो कुछ अन्नर में या स्वप्न में हमको दिखाई देता है यह है नहीं किन्तु यह केवल संसार है, मेरे जीवन ने पलटा खाया। लोग मुझे अपने स्वप्न में देखते हैं समाधि के समय प्रकाश में देखते हैं या मरते समय देखते हैं क्योंकि मैं नहीं होता इसलिए मुझे विश्वासहो गया कि मैं भी जितने दृश्य अपने अन्तर देखता हूं वह सब कल्पित हैं। सहस दल कमल के दृश्य कल्पित, त्रकुटि के नजारे कल्पित, सुन, महासुन के दृश्य कल्पित और भंवर गुफा के दृश्य सब कल्पित हैं और यह मेरा घर नहीं है। इससे आगे प्रकाश। जब लोग मुझे प्रकाश में देखते हैं और मैं तो होता नहीं तो मैं सोचने के लिए विवश हो गया। मैं भी अपने अन्तर में हजूर दाता दयाल जी महाराज का

रूप देखता था और अब भी देखता हूं हजूर ने मुझे कहा था कि फकोर ! सन्तों का मार्ग सच्चा है इस पर चल । मैं इस मार्ग पर चलता हूं । मुझे यह समझ आई कि मेरा घर न अन्नमय कोष है, न मनामय कोष है न विज्ञानमय कोष है और न आनन्दमय कोष है । तो फिर मेरा घर कहां है ? आह ! जानता हूं और उसका अनुभव करता हूं किन्तु अभी वहां मुझसे ठहरा नहीं जाता । वह घर वह अवस्था है, जहां न शरीर का विचार है, न मन के रूप रंग और रेखाएं हैं, न प्रकाश है और न ही शब्द है । यदि शब्द मेरा घर होता तो जब मैं शब्द में जाता हूं तो वहीं ठहर जाता किन्तु कोई शक्ति है जो फिर मुझे शरीर में ले जाती है और फिर आश्चर्य यह है कि जब शरीर में कोई रोग होता है तो उसको भी अनुभव करता हूं ।

(मस्ती में हजूर गाने लग गए)

इस खवत में उमरिया गुजर गई, ढून्डत ढून्डत हो निज देश
बहुत सुनी बातें पन्थों की और बहुत सुने गुरु उपदेस
समझ न आई हार रहा हूं वस केवल एक है मेरा सन्देश
घर है मेरा अलख अनामी जहां नहीं सेवक न कोई स्वामी

न कोई रूप न रंग न रेखा क्या कहूं वह है कैसा देश

चाहता हूं मुड़ कर नहीं आऊं पर मेरा वहां पर बस नहीं चलता। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। राए साहिब सुरेन्द्र नाथ, मामचन्द और सन्त कृपालसिंह जी महाराज की मृत्यु मुझे हर समय यह याद दिलाती है कि मैंने भी एक दिन यहां से जाना है। फिर किस घर की सुध करूं ? जो कबीर साहब कहते हैं ,---

हंसा सुधि कर अपनो देशा।
इहाँ आई तोरी सुधि बुधि विसरी, आनि फंसे परदेसा
अबहूं चेतु हेतु करु पिउ से सतगुरु के उपदेशा॥

सोचता हूं कि क्या मैं आप यहां आया हूं ? मेरा मष्तिष्क काम नहीं करता। मैं नहीं कहता कि मैं आप आया हूं। मैं तो यह कहता हूं कि मुझे बनाया गया है और यहां भेजा गया है। कौन स्वयं विपत्ति में आ के फंसता है। किसी ने बनाया और यहां भेज दिया। तो अब किस पिउ से प्रेम करूं ? पहले राम को पिउ मान कर उससे प्रेम करता था फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज को मानकर उनसे प्रेम किया। और सत्संगियों के अनुभवों ने

मेरी आंखें खोली । प्रकाश को प्रीतम मान के प्रेम किया, अब शब्द को प्रीतम मान के उससे प्रेम करता हूं किन्तु सोचता हूं कि शब्द मेरा प्रीतम कैसे हुआ ? शब्द को तो मैं सुनता हूं । जैसे भूल से मैंने राम को या दाता दयाल जी महाराज को और प्रकाश को माना वैसे ही अब शब्द को प्रीतम मान रहा हूं । तो फिर प्रीतम कौन हुआ ? प्रीतम यदि कोई है तो मेरी वह अवस्था है जहां :---

(हजूर मस्ती में आ कर गाने लगे)

जहां नही राम न कृष्ण न गुरु न स्वामी,
जहां नहीं देह न मन नहीं आत्म नामी ।
वह क्या है ? क्या कहूं कोई नाम न रूपा,
है है है पर प्रसंग अरूपा ।

यह मेरा अनुभव है । कबीर साहब कहते हैं :--

कोन देस से आए हंसा, कबहूं न कीन्ह अन्देसा
आई परयो तुम मोह फन्द में, काल गह्यो तेरो देसा

सारा जीवन अन्देसा करते करते व्यतीत हो गया । जब से होश आई अपने घर की खोज करता हुआ चला आ रहा हूं । ऐ कबीर साहिब ! यदि आप इस समय होते तो आपसे पूछता कि किसी का

संसार का मोह, पुत्रों का मोह, धन संपत्ति का मोह और किसी का गुरु का या प्रकाश और शब्द का मोह। क्या अन्तर है दोनों में।

लाओ सुरत अस्थान अलख पर. जा को रटत महेसा।
जुगन जुगन की संसय छूटै. छूटै काल कलेसा॥

वह कहते हैं कि अलख पर सुरत लगाओ। अलख वह है जो लखा नहीं जाता। देखना और है और लखना और वह लखना है जानना और और समझना। तो जो देखा नहीं जाता, उसकी तो कोई शकल ही नहीं है और न ही उसका कोई रूप है तो फिर वह क्या है और न ही वही है।

(हजूर ने मस्ती में फरमाया)

अकह अपार अगाध अनाम, हेरत रूप वह वही दवाम।
रूप न रंग न रेखा कोई, वह समझे जो खोजी होई।

मैं उसको अलख समझता हूं और उसी को दिन रात खोज रहती है। शारीरिक प्रकृति और वाह्य प्रभाव जो मेरे मस्तिष्क पर पड़े हुए हैं वह मुझे नीचे खैंचते रहते हैं। चाहता हूं कि उस अवस्था से वापस न आऊं। और उसी में गुम हो जाऊं।

"न रहे वाँस और न बजे बांसुरी।" कब यह समय आएगा ? उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

का कहि आयौ काह करत, हो, कहां भूले परदेसा
कहै कबीर वहां चल हंसा, जनम न होय हमेसा।

उस अवस्था ने जा कर सब कुछ भूल जाता हूं वहां न देह की होश, न संकल्पों का विचार रहता है और न ही वहां प्रकाश और शब्द का साधन रहता है। वह क्या अवस्था है ? पता नहीं। यह तो कबीर साहिब को पता होगा कि वह क्या वायदा करके आए थे। मुझे तो यह भी पता नहीं कि जब मैं पेट में था तो मेरी क्या दशा थी। जब बच्चा पेट में होता है तो वह वन्दश में होता है तह जकड़ा हुआ होता है और वह स्वतन्त्र होना चाहता है वह मां के पेट से बल पूर्वक वाहर आता है यदि मां चाहे भी तो वह बच्चे को पेट में नहीं रख सकती। बच्चा अंडे को फोड़ कर वाहर आता है। क्यों ? जीवन वन्दश से स्वतन्त्रता चाहता है। हम आजादी तो चाहते हैं लेकिन तन मन धन देश धर्म पन्थ और खुदा ईश्वर के बन्धन में आ जाते हैं। एक बन्धन से निकले और अनेक बन्धनों में फंस गए।

इन बन्धनों में कष्ट है दूसरे कदाचित अनुभव न करें लेकिन मैं करता हूं। हम विवश हैं हमें भूख लगती है प्यास लगती है और नींद आती है यह बन्धन तो सबसे प्रबल है और बन्धनों को तो शायद छोड़ भी दोगे लेकिन इनसे तो कोई आजाद नहीं हो सकता। देखो ! धर्म कर्म भी बन्धन, गुरु का भी बन्धन, प्रकाश भी बन्धन और शब्द भी बन्धन। यह कब समाप्त होते हैं ? जब आदमी अलख पर पहुंच जाता है। इसलिए तो कबीर साहिब ने कहा है कि :—

कहै कबीर वहां चल हंसा, जनम न होय हमेसा।

वहाँ जाने का प्रयत्न करता रहता हूं। क्या खबर पता कि फिर जन्म होगा या पार जाऊंगा। किन्तु इस जीवन में यह अनुभव हुआ कि यहां नेकी के साथ बदी है। दुख के साथ सुख है और पाप के साथ पुण्य है। श्री रामचन्द, सरेन्द्र नाथ और सन्त कृपाल सिंह जी तो यहां से चले गए। उनको मृत्यु ने मुझे यह विचार दिया कि में मुसाफिर हूं और एक दिन मैं ने भी जाना है। हजूर

दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं जो कुछ स्वयं अनुभव करता हूं वह कहता हुं लेकिन मैं दावा किसी बात का नहीं करता ।

(सब को राधास्वामी)

प्रवचन हजूर परम दयाल जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

(राए साहब की श्रद्धाँजली में सम्मलित किया जायेगा)

दिनांक १७ सितम्बर १९७४

सब हैं जाने वाले जग से रहने वाला कोई नहीं ।
रामचन्द्र अवधेश भुवाला. दीनानाथ दीन प्रतिपाला ।
गए त्याग कर धर्म रटाला, रमने वाला कोई नहीं ॥
रावण गया बुद्धि वल शीला, सहस उद्यम में फुरतीला ।
छैल छबीला रंग रंगीला, थमने वाला कोई नहीं ॥
सोलह कला कृष्ण औतारा, जिनकी गति का वार न पारा
गए सहित कुल और परिवारा, रुकने वाला कोई नहीं ।
परसराम क्रोधी अभिमानी, तेजस्वी बल बुद्धि की खानी ।
ऐसे गए न नाम निशानी, टिकने वाला कोई नहीं ॥
मच्छ कच्छ बाराह पसारा, मिट गए जाने सब संसारा
गए छोड़ माया विस्तारा, बसने वाला कोई नहीं ।
बावन वलि सहस्त्रबाहू. नर भूषण नरेश नर नाहू
सह सह गए ताप त्रय दोहू, बचने वाला कोई नहीं ।
विश्वामित्र अगस्त वशिष्टा, गौतम न्याय सृष्टि का सृष्टा ।
दुरयोधन दिल्ली का राजा, जिसने भारत दल को साजा
चला त्याग कर सकल समाजा, मुनने वाला कोई नहीं ॥
राधास्वामी संत शिरोमणि आए, दे चितावनी जीव चिताए
सुरत शब्द मत पन्थ चलाए, चलने वाला कोई नहीं ॥

राधास्वामी । इस शब्द में लिखा हुआ है कि राधास्वामी दयाल इस संसार में आये और सुरत शब्द योग चला गए लेकिन चलने वाला कोई नहीं। मैं समझता हूं कि गो में सारा जीवन पन्थ में चला किन्तु चला नहीं। क्यों? मैं इस बात को अच्छी तरह से जान गया कि हम सब लोग जो सुरत शब्द योग का अभ्यास करते हैं यह केवल शक्लें या रंगरूप ही देखते रहते हैं और दृश्य ही देखते रहते हैं उन्हीं में फंसे रहते हैं। अभ्यास तो कोई करता ही नहीं और यदि किसी को थोड़ा सा अनुबव हो गया तो फिर मेरे जैसे लोग सत्संग कराना आरम्भ कर देते हैं। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इसलिए मैं जो यह सत्संग का काम करता हूं यह किसी पर उपकार नहीं है जब से मुझे यह ज्ञान हुआ किसी के अंतर नहीं जाता तो मुझे यह विश्वास हो गया कि यह जितने अभ्यासी हैं चाहे वह सुरत शब्द योग के हैं या किसी और मत के हैं वह क्या करते हैं? आज एक गुरु मर गया तो दूसरे ने नाम ले लिया वह मर गया तो तीसरे

ने नाम ले लिया तो यह सुरत शब्द का तो साधन ही नहीं करते और यदि यह करते हैं तो क्या मन में ध्यान करने से या अपने अन्तर में बातें करने से या ज्ञान विज्ञान करने से हमारा आवागमन समाप्त हो जाएगा ? समझो मेरी बात को। कल राजेश्वर राव का पत्र आया। उसने लिखा है कि राए साहिब सुरेन्द्र नाथ जी ने मुझसे कहा था कि यदि में १९७४ में मर गया तो तुम्हारे यहां पोता बनके आऊंगा और यदि १९७४ में मेरी मृत्यु नहीं हुई तो फिर मोक्ष को प्राप्त हो जाऊंगा। तो सुरत शब्द के जिस अभ्यासी के दिल में दुबारा जन्म लेने का विचार होगा वह तो वापस आएगा ही। दूसरे "अन्त मता सो गता" के नियम के अनुसार अन्त समय पर जो दृश्य किसी के सामने आएगा तो उसके अनुसार जन्म लेना पड़ेगा।

यह मैं अपने आपको समझा रहा हूं कि फकीर एक दिन तुमने भी यहाँ से जाना है। मैं बचपन से मालिक को मिलने निकला था और सारा जीवन सुरत शब्द योग का साधन किया। वह शब्द में लिखते हैं कि राधास्वामी सन्त सिरोमणि आए

राधास्वामी मत चलाया लेकिन चलने वाला कोई नहीं कौस चलने वाला नहीं जो हजूर बावा सावनसिंह जी महाराज को या दाता दयाल जी महाराज को बाबे फकीर को या राम या कृष्ण को अर्थात् किसी सगुण स्वरूप को अपना इष्ट मानता है वह शब्द मार्गी नहीं है। इसलिए मैं कहता हूं कि इस समय का जितना भी गुरुमत है चाहेवह किसी डेरे का या गद्दी का है इनमें से कोई भी सुरत शब्द योग का अभ्यासी नहीं है क्योंकि अन्तिम समय पर जो तुम्हारी वासना होगी उसके अनुसार तुम वहां आ के जन्म लोगे। कोई जाता है या नहीं जाता, इसके बारे में मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है लेकिन देखूंगा कि यदि एक दो वर्ष में श्री राजेश्वर राव का पोता हो गया तो मैं मान लूंगा। मैं हूं खोजी और सारा जीवन इस जनून में गुजरा है। मेंने भी हजूर दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया है। जितना जादा मैं उनसे प्रेम करता था उतना ही वह मुझे फटकारा करते थे लेकिन उन्होंने मेरा दिल नहीं तोड़ा।

राए साहिब सुरेन्द्र नाथ के बारे श्री राजेश्वर राव ने लिखा है कि उन्होंने मरने से पहले यह कहा

कि बाबू जी ! अब मुझे छोड़ दो । यह उनके अन्तिम शब्द थे । अब उस समय उनकी सुरत कहां थी यह कोई पता नहीं । मैं भी रात को कई प्रकार के स्वप्न देखता हूं । गोपाल दास ने भी रात को अद्भुत स्वप्न देखा इस मन के चक्कर से निकलना बहुत कठिन है । मेरा प्रयत्न जारी है लेकिन अभी तक मैं मन से निकला नहीं । बहुत अच्छा हुआ कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया । मैं यह समझता था कि वह मालिक के अवतार हैं और जब उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता था मैं समझता था कि मैंने मैदान मार लिया । और इससे मुझे सन्तुष्टि थी । एक बार जव वह मेरे पास गिदड़वाहा में आए तो कहा कि फकीर ! अभी तुम अधूरे हो और मुझे आज्ञा दी कि सत्संग कराते रहना इससे तुम्हारी कमी दूर हो जाएगी और अब वह कमी पूरी हो रही है । अब मैं उस माल के कुल (सर्वाधार) को अपना इष्ट रखता हूं । यदि अन्तिम समय पर वह मुझे याद रह गया तब तो मैं पार हो जाऊंगा अन्यथा सारी आयु का ज्ञान ध्यान समाप्त हो जाएगा । हां । इसका संस्कार

पड़ा हुआ है। हो सकता है कि यह संस्कार दूसरे जन्म में मेरी सहायता करें।

मुझे विचार आता है कि मैं भी और संसार में और भी हजारों लोग सुरत शब्द योग का अभ्यास करते हैं लेकिन हम चलने वाले कैसे नहीं हैं? केवल इसलिए कि हम कांट छांट करते रहते हैं और अन्तर में जो रूर रंग पैदा होते हैं उनसे आनन्द लेते रहते हैं और अन्तर में बातें करते रहते है। मैं लोगों को तो कह देता हूं लेकिन मैं भी इससे बरी नहीं मैंने जितनी किताबें लिखी हैं या सत्संग कराए हैं या अनुभव वर्णन किया है यह भी तो सुरत शब्द योग नहीं है। यह तो मन का प्रेमानन्द या ज्ञानानन्द या आत्मानन्द है, मैं तो इनमें फंसा हुआ हूं। यदि इनमें फंसा हुआ न होता तो मैं यह किताबें क्यों लिखता? यह काम मैं केवल अपने जीवन को व्यतीत करने के लिए करता हूं दूसरों के लिए नहीं करता। हां! यदि मेरे इस काम से किसी को समझ आ जाए या किसी का लाभ हो जाए तो मुझे बहुत खुशी है। अब मेरी कोशिश यह रहती है कि केवल शब्द को पकड़ और बाकी सब कुछ खोज

दूं लेकिन अभी तक छूटता नहीं है। फिर सोचता हूं कि फकीर ! जब तुम इतने अभ्यासी होते हुए भी छोड़ नहीं सकते तो जीव नो निचली श्रेणियों के हैं यह कैसे छोड़ सकते हैं ? इसलिए सन्तों ने बीज डाल दिया, नाम दान या संस्कार दे दिया कि जन्म जन्मान्त्रों के सिलसिले में कभी तो तुम को असलियत की समझ आ जाएगी। ऊपरके शब्दमें लिखा है कि "चलने वाला कोई नहीं।" चलना क्या है ? केवल अपने अन्तर में 'अनहद नाम' अवगत या प्रणव को पकड़ना है; वही सतगुरु है वही मालिक है और वही सृष्टि का आद है। विज्ञान और शास्त्रों के अनुसार शब्द से ही सब रचना होती है और शब्द में ही समा जाती है इसलिए पुर्ण रूप से शब्द अभ्यासी बनो। आह ! मैं किसी को कुछ कहने वाला या शिक्षा देने वाला कौन हूं। में तो अपने घर जाना चाहता हूं और प्रयत्न करता रहता हूं किन्तु यह मन इतना वैरी है कि अभ्यास में लगता नहीं और स्वप्न में तंग करता है। सच्ची बात बता रहा हूं। स्वप्न में चाहे बुरे दृश्य नहीं आते लेकिन माता पिता या कोई और दृश्य कभी २

आ जाता है। चाहता हूं कि यह दृश्य नजर न आएं लेकिन यह मेरे वस की बात नहीं है। जितना हो सकता है इतना साधन करता हूं और फिर संसार का काम करता हूं लेकिन अब संसार के काम का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पढ़ता।

क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव वर्णन कर जाऊंगा इसलिए उन अनुभव के आधार पर कहता हूं कि यहां आगे जाने वाला कोई नहीं ? हम लोग मन के चक्कर में आ के अपने अन्तर में कोई किसी से ओर कोई किसी से बातें करते हैं और फिर उनकी प्रशंसा करते हैं। वस इसी में फंसे रहते हैं। इसलिए इससे सिद्ध हुआ कि आवागमन से बचने के लिए केवल सुरत शब्द योग का मार्ग है। पता नहीं कि फिर जन्म होता है या नहीं। जीवन में एक जनून था। जीवन में मैंने कष्ट भी उठाया और अब भी उठाता हूं। कभी कोई सत्संगी और कभी कोई सम्बन्धी बिमार हो जाता है या कभी कोई मर जाता है और कभी कोई शारीरिक रोग हो जाता है। लेकिन मेरे वस की बात नहीं

है। जब आप लोगों को कोई कष्ट होता है तो चाहता हूं कि आप लोगों का मुझे विचार न आए किन्तु आ जाता है लेकिन प्रयत्न करता रहता हूं। आप लोग मेरे लिए प्रार्थना करो कि जिस ध्येय के लिए निकला था वहां पहुंच जाऊं।

सबको राधास्वामी

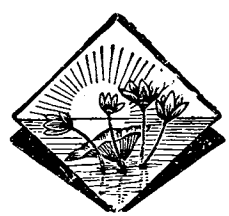

सत्संग

परमसन्त सद्गुरु हिज होलीनेस
हजूर मानव दयाल जी महाराज
डा. ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

22-5-1994

शब्द

कहूं उस देश की बतियां,
जहां नहि होत दिन रतियां।
नहीं रविचन्द्र नहिं तारा,
नहीं उजियारा अन्धियारा॥
नहीं वहां पवन नहिं पानी,
गये वहि देस तिन जानी।

मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। मैं कोई नई शिक्षा तो लाया नहीं। हां, अपने जीवन में जो भी अनुभव किए, उन्हें सच्चाई और ईमानदारी से आपके साथ बांट रहा हूं! मैं बार-बार यही कहता हूं कि सच्चा गुरु वही होता है, जो अपने शिष्यों के जीवन बनाता है, उनको उभारता है ताकि शिष्यों का लोक तथा परलोक दोनों बन जाये। परन्तु जीवन बनता किनका है? उनका जो एक के होकर रहते हैं, जो धन, स्त्री तथा सम्पदा को मालिक को सौंप कर निश्चिन्त हो जाते हैं।

॥ सबको राधास्वामी ॥

—0—

सूचना महत्वपूर्ण

सभी सत्संगीजन को सूचित किया जाता है कि मन्दिर को मनीआर्डर आदि भेजते समय अपना पता तथा पिनकोड नं० साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो और मनीआर्डर आदि केवल सैक्रेटरी मानवता मन्दिर या सैक्रेटरी फकीर लायब्रेरी चेरिटेबल ट्रस्ट, मानवता मन्दिर, सुतैहरी रोड़, होशियारपुर के नाम पर भेजें। किसी व्यक्तिगत नाम पर नहीं।

जनरल सैक्रेटरी,
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज

मानवता मंदिर होशियारपुर

दिनांक १८ फरवरी १९७४

राए साहिब सुरेन्द्र नाथ की श्रद्धांजली में सम्मिलित किया जाएगा

अरे दिल गाफिल, गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवैगा ॥

सौदा करने को यह जग आया. पून्जी लाया मूल गंवाया ।
प्रेम नगर का अन्त न पाया, ज्यों आया त्यो जावैगा ॥
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या २ कीता ॥
सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा ॥
परला पार सेरा मीता खड़िया, उस मिलने का ध्यान न धरिया
टूटी नाव उपर जा बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥
दास कबीर कहै समुझाई अंत काल तेरो कौन सहाई ।
चला अकेला संग न काई, किया अपना पावैगा ॥

राधास्वामी ! मेरा जीवन तो पहले ही बना हुआ था लेकिन इन तीन मौतों ने मुझे बहुत शिक्षा दी । पहली मृत्यु श्री मामचन्द की । ऐसा सच्चा

और निष्काम भक्त किसी को मिला नहीं। हजूर राए सालिग राम साहब जी महाराज का उदाहरण होगा किन्तु वह और बात थी। सन्त कृपालसिंह जी महाराज चोला छोड़ गए। मैं उनका बहुत आदर करता था इसलिए नहीं कि वे सन्त थे बल्कि इसलिए कि एक बार जब मैं १९४२ में हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के दरबार में गया और कहा कि में यह काम नहीं करना चाहता उन्होंने पूछा कि क्यों ? मैंने कहा कि मैं सच्चाई वर्णन करता हूं इससे ससार मेरे विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि फकीर ! डेरे के कारण सच्च मैं भी नहीं कह सका और दूसरे जीव भी इस सच्चाई के अधिकारी नहीं हैं। उन्होंने कहा कि मैंने लाखों को नाम दिया लेकिन केवल तीन व्यक्ति रहस्य जान सके जिनमें से एक का नाम उन्होंने सन्त कृपालसिंह बताया था इसलिए मैं उनका मान करता था और अब भी करता हूं। वह सन्त थे लेकिन क्या उनको पता था कि वह २१ अगस्त १९७४ को चोला छोड़ जाऊंगा ? नहीं। यदि पता होता तो वह मरने से दस पन्दरह दिन पहले क्यों कहते कि मैं अभी दस

वर्ष और जोऊंगा । उनको दिल का दौरा पड़ा और पूरे हो गए । कोई प्रबन्ध नहीं कर सका ।

तीसरी मृत्यु मेरे छोटे भाई राए साहिब सुरेन्द्र नाथ की हुई वह बहुत बुद्धिमान, कर्मयोगी, परोपकारी और दानी था । बीमार रहता था । हर समय मेरे दिल में यह विचार आता रहता है कि हमने भी एक दिन अवश्य जाना है । जिस दिन मामचन्द को ऊपर से नीचे उतार कर ले आए तो कहने लगा कि मुझे वहां क्यों ले जा रहे हैं ? उस समय न मामचन्द को और न किसी को यह विचार था कि आज चोला छूट जाएगा । ऐसे ही सन्त कृपालसिंह जी महाराज को भी यह पता नहीं था कि उनकी मृत्यु होने वाली है और न ही राए साहब को अपनी मृत्यु के बारे में कोई ज्ञान था । इसने राजेश्वर राव से यह कहा था कि यदि मैं १९७४ में मर गया तो तेरे यहां पोता बन के आऊंगा और यदि १९७५ में मरा तो मुक्ति को प्राप्त हो जाऊंगा । इन सब की मौत का मुझ पर प्रभाव पड़ा । इस संसार में कोई भी हो चाहें, राजा हो, प्रजा हो, साधु हो, भक्त हो, या अभक्त हो, वली हो या रसूल हो और

सन्त हो या असन्त हो, यहां से सबने जाना है। मैं कहां जाऊंगा ? यह प्रश्न हर समय मेरे ध्यान में रहता है। बचपन से अपने आद घर की खोज थी इसी विचार को लेकर हजूर दाता दयाल महाराज के चरण कमलों में गया था, उन्होंने मुझे यह काम दिया। सत्संगियों ने मुझे कहा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है, सुरतें चढ़ा देता है, पुत्र दे जाता है और मरते समय ले जाता है क्योंकि मैं नहीं होता तो इस अनुभव ने मुझे अपने आद घर की खोज के लिए विवश किया। बचपन से इसी खोज के सिलसिले में मैं कभी राम को या कृष्ण को मालिक मानता था फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज जी को मालिक मानता था फिर प्रकाश की और फिर शब्द को मालिक मानता था लेकिन अब इस विचार से कि में किसी के अन्तर नहीं जाता मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अंतर में भी जो कुछ प्रकट होता है वह असल में है नहीं यह सब संस्कार हैं और जिस प्रकार के संस्कार किसी के मस्तिष्क पर पड़े हुए होते हैं वही शकलें बना कर अभ्यास में या स्वप्न में आदमी के सामने आते हैं।

दुरगियां ! तुमने मुझसे प्रेम किया है तेरा मेरा, राए साहब का या और सबका प्रारब्ध कर्मों के अनुसार सम्बन्ध था कोई भाई बन गया, कोई बाप बन गया, कोई गुरु बन गया, कोई चेला बन गया और कोई मित्र बन गया, आदि। तो फकीर साहिब कहते है :---

अरे दिल गाफिल, गलफत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवैगा ॥

यह एक दिन आएगा, अवश्य आएगा और सबको आएगा। इससे कोई बच नहीं सकता। हमारी गफलत क्या है ? हमारे अन्तर में जितने भाव विचार संकल्प और रंग रूप पैदा होते हैं इनका सत भावना हमारी गफलत है। यह मेरी समझ में आया है। हम यहां किसी को भाई, किसी को बेटा, किसी को मित्र और किसी को कुछ समझ लेते हैं हालांकि कोई भी अपना नहीं है। यह सब प्रारब्ध कर्म का लेन देन है यह तो बाहर का हाल है और अन्तर में जो राम या कृष्ण या देवी देवता या बाबा फकीर या कोई और गुरु का रूप प्रकट हो गया, जो यह समझते हैं कि सचमुच वही आकर हमारे अंतर में

प्रकट हुए हैं वह गाफिल हैं, उनको अपना समझना एक गफलत है ।

सौदा करन को जग में आया. पून्जी लाया मूल गंवाया ।

यहां इस संसार में हम क्या सौदा करने आए हैं ? यह तो कबीर साहिब को पता होगा । लेकिन मैं यह समझता हूं कि हर व्यक्ति कुछ न कुछ चाहता है । कोई धन चाहता है, कोई स्त्री चाहता है, कोई कुछ चाहता है और कोई ईश्वर को चाहता है लेकिन यह चाह कौन करता है ? हमारे अन्तर में कोई वस्तु है जो यह सब कुछ चाहती है यदि उसके अनुसार कोई वस्तु मिल गई तो उस चाहने वाली वस्तु को प्रसन्नता, आनन्द और हार्दिक शान्ति मिलती है । यह सांसारिक वस्तुएं तो सदा रहती नहीं । आज कोई वस्तु मिल गई तो हम प्रसन्न होते हैं और यदि वह वस्तु चली गई तो हम दुखो होते हैं । यहां हर एक वस्तु में सदैव परिवर्तन आता रहता है । मन की दशा हर समय बदलती रहती है । हमारी चाह का वास्तविक उद्देश्य क्या है ? शान्ति प्राप्त करना । शांति कहां है ? मैं सोचता हूं कि फकीर ! लोगों को उपदेश करते हो और गुरु बने हुए हो तुम बताओ कि तम इस युग में क्या सौदा करने

आए हो। देखो दोस्तो ! मैं सदा अपना अनुभव बताया करता हूं लेकिन इसका भी मुझको कोई दावा नहीं है। मैं यह समझता हूं कि संसार में हमारा सौदा यह है हम शान्ति को प्राप्त करें। इस संसार में हमने धन मान प्रतिष्ठा आदि के लिए जो कुछ किया उससे तो शांति मिलती नहीं क्योंकि यह चीजें तो नाशवान हैं। शान्ति कब मिलती है ? जब हम रूप रंग आदि को छोड़ कर वहां पहुंच जाते हैं। जिसके लिए स्वामी जी ने लिखा है कि वह हैरतरूप है और वर्णन से बाहर है। आश्चर्य रूप और वर्णनातीत है।

राए साहब का जीवन मेरे सम्मुख आता है यदि उसने श्री राजेश्वर राव को यह कहा कि मैं तुम्हारे लड़के लड़कियों के विवाह देख कर मरूंगा या तेरे यहां पोता बन करके आऊंगा तो उसने क्या किया ? अपना मूल गंवा दिया अपने बच्चों को तो छोड़ गया लेकिन राजेश्वर राव के बच्चों के मोह में फंस गया। यदि राए साहिब का सचमुच ही यह विचार या तो उसने क्या किया ? अपनी पून्जी खो दी। और यदि वह केवल जीवन गुजारने के

लिए ही ऐसी बात कहता था तोफिर मैं नहीं कह सकता। मैं भी तुम लोगों के साथ ऐसा ही कहता हूं। तुम सब से प्यार और प्रेम करता हूं। केवल जीवन गुजारने के लिए और संसार में जीने के लिए। राए साहब के मन का क्या भाव था उसका मुझे पता नहीं। यदि उसके दिल में राजेश्वर राव और उसके बच्चों का मोह था तो मुझे दुख है क्योंकि इससे उसको दूसरा जन्म मिलना आवश्यक है। मैं उसका क्रिया कर्म न करता लेकिन अब मैं अवश्य करूंगा। यदि सुरेन्द्र नाथ की आत्मा कहीं है तो मैं उसको यह कहना चाहता हूं कि बच्चा। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने तुम को नाम दान दिया और संस्कार दिया। मैं भी तुमको Uplift करता रहा। तम इस विचार को छोड़ कर अपने घर जाओ। यह है असली क्रिया कर्म। बाकी जो कुछ हम लोग करते हैं यह सब दिखाने के लिए करते हैं।

प्रेम नगर का अन्त न पाया, ज्यों आया त्यौं जावैगा।

प्रेम नगर क्या है ? सन्तान से प्रेम, संपत्ति से प्रेम और गुरु की देह से प्रेम लेकिन यह सब नाश-वान हैं तो फिर किससे प्रेम करूं ? मेरी समझ में

यह आया कि प्रेम उससे करना चाहिए जो वस्तु हमारे अन्तर में रहतो हुई रंग रूप और शक्लें जो हमारे अन्तर में पैदा होते हैं उनकी भाषा है वह है असली और सच्चा प्रीतम, वही अपनी जात है और वही अपना आप है। इसलिए प्रेम किस से हुआ ? अपनी जात से और अपने आप से। उसकी खोज में मैंने सारा जीवन व्यतीत किया। क्योंकि अपने आप से प्रेम हो नहीं सकता इसलिए एक इष्ट बनाया जाता है और उसके सहारे अपने ही आप से प्रेम किया जाता है। स्वामी जी महाराज ने कहा है :--

आप आप को आप पहचानो, कहा और का नेक न मानो ।

वह अपना आप क्या है ? उसकी खोज में सदा लगा रहा। अब मैं रूपरंग सब छोड़ गया। अब अपने अन्तर में मेरा साधन प्रकाश और शब्द से ही आरम्भ होता है लेकिन जब मन में आता हूं तो हजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप को अपने सामने रखता हूं।

हजूर दाता दयाल जी महाराज के चोला छोड़ने पर मेरी आंख से आंसू तक नहीं आए क्योंकि मैं यह समझता हूं कि गुरु न पैदा होता है और न

मरता है । मेरे मरने पर जो व्यक्ति रोयेंगे या शोक करेंगे उन्होंने मेरी शिक्षा को बिलकुल नहीं समझा । गुरु तुम्हारा अपना ही आप है बाहर के गुरु की इतनी ही दया है और यह उसका कर्तव्य है कि वह जीव को असलियत और सार वस्तु का ज्ञान देकर उसको अपने आप में ठहरने के योग्य बना दे । क्योंकि मेरे जिम्मे जीवों को गुरु के देश पहुंचाने और जगत कल्याण का कर्तव्य है इसलिए मैं यह काम करता हूं अन्यथा मेरा इस काम से क्या तात्पर्य और मैंने इस काम से क्या बचा लेना है । मुझें इस काम से कोई बन्धन भी नहीं हैं इसलिए तुम निर्बन्ध हो के मन्दिर में काम करो समझते हो मुन्शी राम ? जबतक जीवन है तबतक काम तो करना ही है फिर निर्बन्ध हो के करो । यदि तुम परोपकार में भी फंस गए तो तुम अपने आद घर नहीं जा सकोगे ।

सुन मेरे साजना सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या कीता
सिर पाहन का बोझा लीता, आगै कौन छुढ़ावेगा ॥

मैं अपने जीवन को देखता हूं । मैं निर्धन था । अपना और अपने बाल बच्चों का पेट पालने के

लिए मैंने रेल विभाग में नौकरी की। क्योंकि मैंने अपने निजी स्वार्थ के लिए यह काम किया था और उसका संस्कार मेरे मस्तिष्क पर पड़ा हुआ है इसलिए अब तक भी वह रेल और तार मेरे स्वप्न में आते रहते हैं। कभी लड़का या मेरी स्त्री या कभी २ मां बाप भी स्वप्न में आ जाते हैं। जो काम हम अपने स्वार्थ के लिए करते हैं या जिनके साथ हमारा गहरा सम्बन्ध होता है, उनके संस्कार मस्तिष्क पर पड़ जाते हैं और फिर वह स्वप्न में या समाधी में शकलें बनाकर हमारे सामने आते हैं। अब मैंने यह मानवता मंदिर बनाया है। प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों से मिलता हूं और सबसे प्रेम करता हूं लेकिन यह कभी मेरे स्वप्न में नहीं आते क्योंकि इसके साथ मेरा कोई अपना स्वार्थ नहीं है। जो काम हम अपने स्वार्थ के लिए करते हैं उसका संस्कार जो हमारे मस्तिष्क पर पड़ जाता है वह है भार और वह बोझ हमारे मस्तिष्क से निकलता नही इसलिए तो मेरे स्वप्न में अभी तक भी मां बाप स्त्री और रेल तार आते रहते हैं इस वास्ते यदि कोई यह भार न लेना चाहता हो तो वह

अपने स्वार्थ के लिए कोई काम न करे और काम को काम की दृष्टि से करे। इसलिए हमें आगे कौन छुड़ायेगा ? यह कबीर साहिब को पता होगा।

परला पार मेरा सीता खड़िया. उस मिलने का ध्यान न धरिया
टूटी नाव ऊपर जा बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥

परलय के पार क्या चीज है ? वह है मेरे अपने आप की वह अवस्था जहां मन (Function) काम नहीं करता यह वह अवस्था है जिसको हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज कहा करते थे कि "दसवें द्वार से आगे लंघोगे तां तो आगे मैं खलोता हाँ।" जब कोई व्यक्ति मानसिक इष्ट रखता है या किसी सगुण देहधारी का इष्ट रखता है या निराकार या सगुण की उपासना करता है वह मन से परे नहीं जा सकता क्योंकि सगुन और निर्गुण दोनों ही मन के विचार हैं।

तुम लोग मेरी सेवा करते हो मैं अपना कर्तव्य पूरा करना चाहता हूं ताकि मेरी आत्मा पर गुरु बनने का कोई पाप न रहे। क्योंकि मैं सच्चाई वर्णन करता हूं और किसी से धोखा फरेब नहीं